RATNA JYOTI
RATNA JYOTI

Sample

13 Aug 1990

05:30 AM

Delhi

Model: Web-KundliDarpan

SrNo: 101-111-105-1030 / 181

Phone: +91-341-2668022
Mobile : +91-9732150484
Whatsapp : +91-9732150484

RATNA JYOTI®

Website: https://www.ratnajyoti.com/
E-Mail: astrology@ratnajyoti.com

Bahula (Near Netaji Statue), Durgapur, West Burdwan ,W.B , India ,Zip-713322

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**12-13/08/1990**
दिन	रवि-सोमवार
जन्म समय	**05:30:00 घंटे**
इष्ट	59:13:56 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	05:08:52 घंटे
वेलान्तर	-00:05:05 घंटे
साम्पातिक काल	02:33:32 घंटे
सूर्योदय	05:48:25 घंटे
सूर्यास्त	19:03:29 घंटे
दिनमान	13:15:03 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	26:16:27 कर्क
लग्न के अंश	21:23:23 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी	**मेष - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**भरणी - 2**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	वृद्धि
करण	बव
गण	मनुष्य
योनि	गज
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	लू-लूनेश
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1912	श्रावण	22
पंजाबी	संवत : 2047	श्रावण	29
बंगाली	सन् : 1397	श्रावण	28
तमिल	संवत : 2047	आदी	29
केरल	कोल्लम : 1165	कर्कदम	28
नेपाली	संवत : 2047	श्रावण	29
चैत्रादि	संवत : 2047	भाद्रपद	कृष्ण 7
कार्तिकादि	संवत : 2047	श्रावण	कृष्ण 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 6
तिथि समाप्ति काल _____: 12:40:39
जन्म तिथि _____: 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: अश्विनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 22:25:25 घंटे
जन्म योग _____: भरणी
सूर्योदय कालीन योग _____: शूल
योग समाप्ति काल _____: 07:34:00 घंटे
जन्म योग _____: वृद्धि
सूर्योदय कालीन करण _____: वणिज
करण समाप्ति काल _____: 12:40:39 घंटे
जन्म करण _____: बव
भयात _____: 17:41:28
भभोग _____: 56:25:39
भोग्य दशा काल _____: शुक्र 13 वर्ष 8 मा 27 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: मेष
सूर्य _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगल _____: सिंह
बुध _____: वृष
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

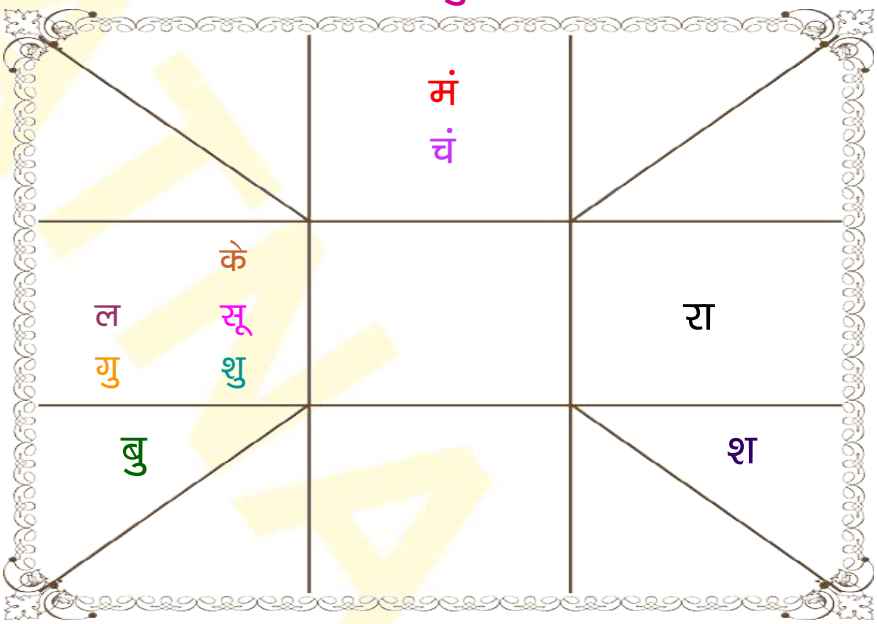

चन्द्र कुंडली

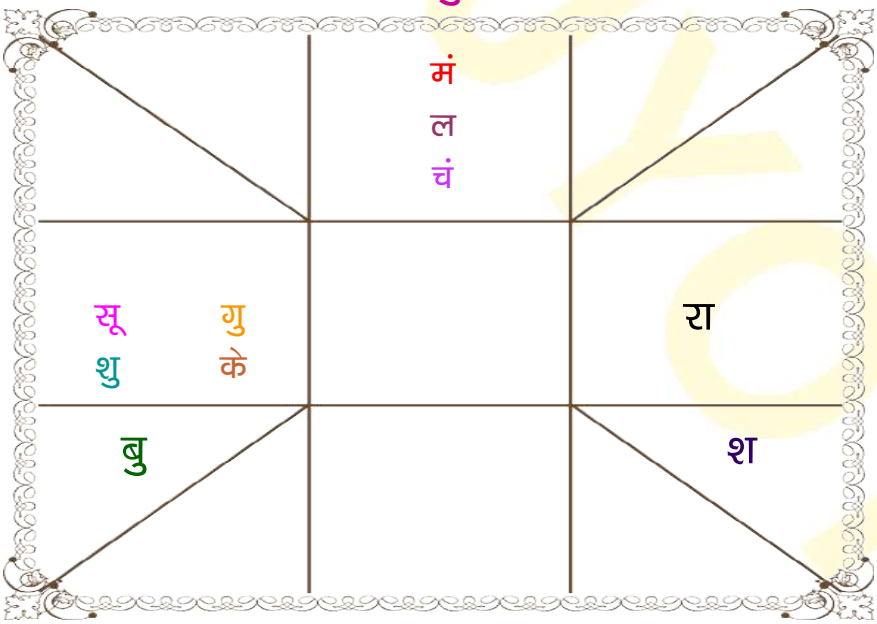

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

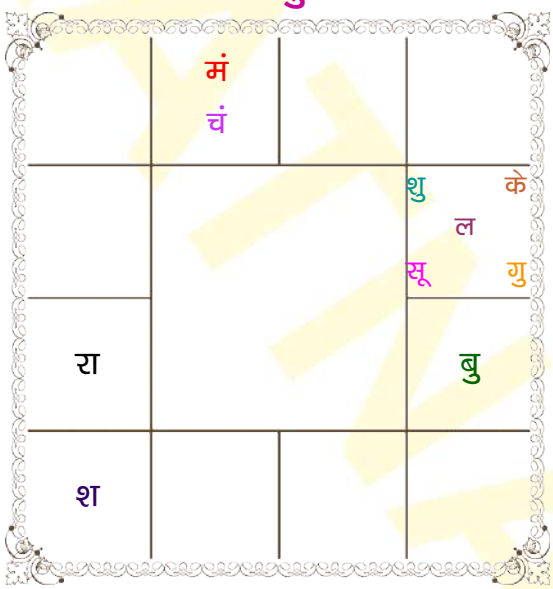

लग्न कुंडली

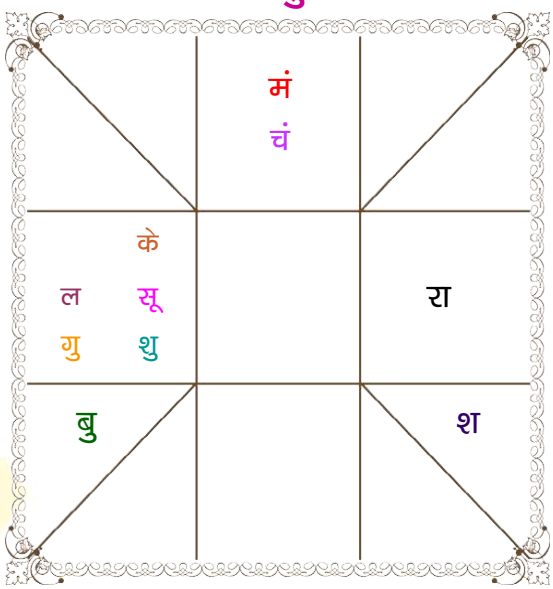

विंशोत्तरी
शुक्र 13वर्ष 8मा 27दि

शुक्र

13/08/1990

11/05/2104

शुक्र	10/05/2004
सूर्य	10/05/2010
चन्द्र	10/05/2020
मंगल	11/05/2027
राहु	10/05/2045
गुरु	10/05/2061
शनि	10/05/2080
बुध	10/05/2097
केतु	11/05/2104

योगिनी
भद्रिका 3वर्ष 5मा 6दि

धान्या

19/01/2018

18/01/2021

धान्या	20/04/2018
भ्रामरी	20/08/2018
भद्रिका	19/01/2019
उल्का	20/07/2019
सिद्धा	18/02/2020
संकटा	19/10/2020
मंगला	18/11/2020
पिंगला	18/01/2021

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	21:23:23	307:56:09	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	---
सूर्य			कर्क	26:16:27	00:57:36	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	गुरु	मित्र राशि
चंद्र			मेष	17:30:20	14:09:50	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	मंगल	सम राशि
मंगल			मेष	26:12:12	00:35:08	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	केतु	स्वराशि
बुध			सिंह	23:36:00	00:53:36	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	शनि	मित्र राशि
गुरु			कर्क	05:07:53	00:12:57	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	उच्च राशि
शुक्र			कर्क	05:08:52	01:13:10	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	शत्रु राशि
शनि	व		धनु	26:16:31	00:03:31	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	केतु	सम राशि
राहु	व		मक	13:29:45	00:00:29	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	राहु	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	13:29:45	00:00:29	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	राहु	मित्र राशि
हर्ष	व		धनु	12:18:08	00:01:31	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
नेप	व		धनु	18:30:43	00:01:12	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	---
प्लूटो			तुला	21:19:50	00:00:37	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	---
दशम भाव			मेष	17:04:57	--	भरणी	--	2	मंगल	शुक्र	चंद्र	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:43:48

लग्न-चलित

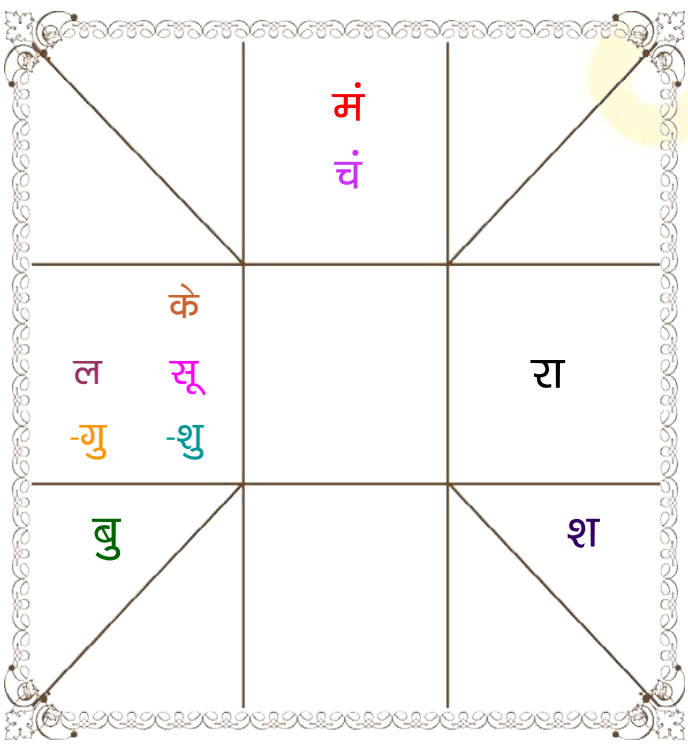

चन्द्र कुंडली

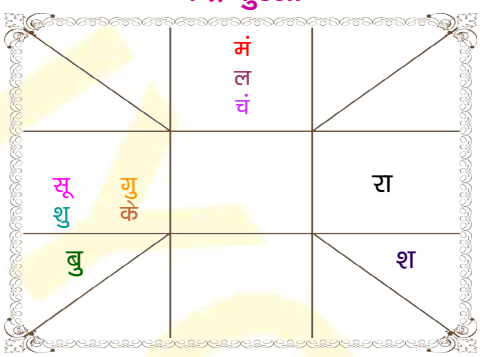

नवमांश कुंडली

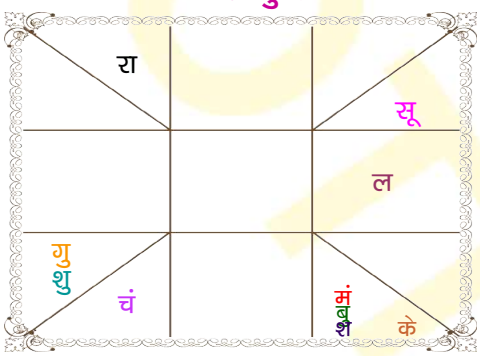

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कर्क	05:40:18	कर्क	21:23:23
2	सिंह	05:40:18	सिंह	19:57:14
3	कन्या	04:14:10	कन्या	18:31:05
4	तुला	02:48:01	तुला	17:04:57
5	वृश्चिक	02:48:01	वृश्चिक	18:31:05
6	धनु	04:14:10	धनु	19:57:14
7	मकर	05:40:18	मकर	21:23:23
8	कुम्भ	05:40:18	कुम्भ	19:57:14
9	मीन	04:14:10	मीन	18:31:05
10	मेष	02:48:01	मेष	17:04:57
11	वृष	02:48:01	वृष	18:31:05
12	मिथुन	04:14:10	मिथुन	19:57:14

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	21:23:23
2	सिंह	16:00:46
3	कन्या	14:44:11
4	तुला	17:04:57
5	वृश्चिक	20:21:58
6	धनु	22:02:37
7	मकर	21:23:23
8	कुम्भ	16:00:46
9	मीन	14:44:11
10	मेष	17:04:57
11	वृष	20:21:58
12	मिथुन	22:02:37

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली

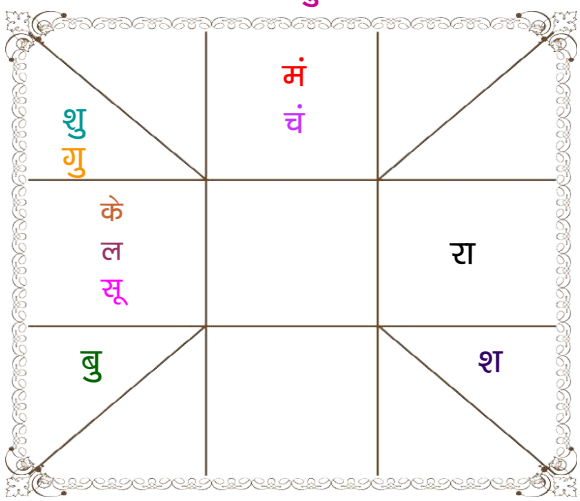

भाव कुंडली

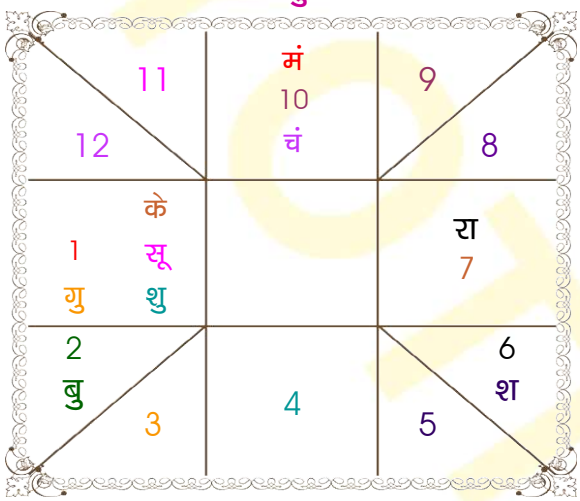

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------		------- अवस्था -------				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	बाल	मुदित	गमन	5.46	65 %
चंद्र	पुत्र	मातृ	युवा	निपीदित	गमन	4.11	76 %
मंगल	भ्रातृ	भ्रातृ	मृत	स्वस्थ	गमन	3.82	58 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	वृद्ध	मुदित	भोजन	5.87	70 %
गुरु	कलत्र	धन	मृत	दीप्त	शयन	20.98	36 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	मृत	खल	गमन	3.64	17 %
शनि	आत्मा	आयु	मृत	शक्त	भोजन	1.58	45 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	मुदित	भोजन	0.00	50 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	मुदित	गमन	0.00	50 %
कुल						45.47	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली

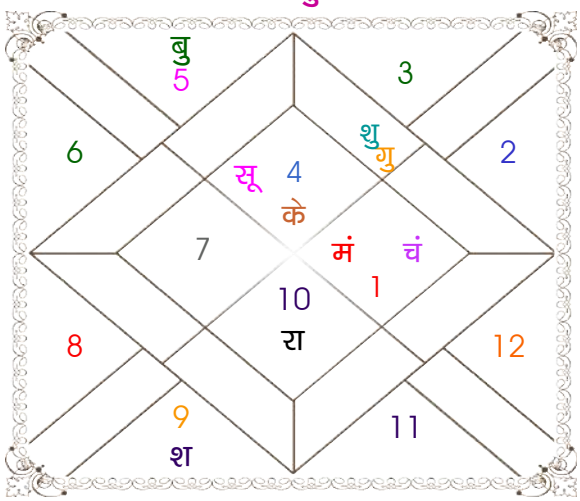

लग्न-चलित

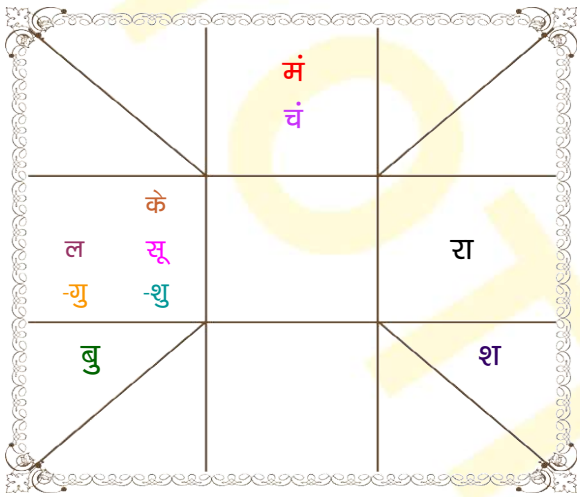

सुदर्शन चक्र

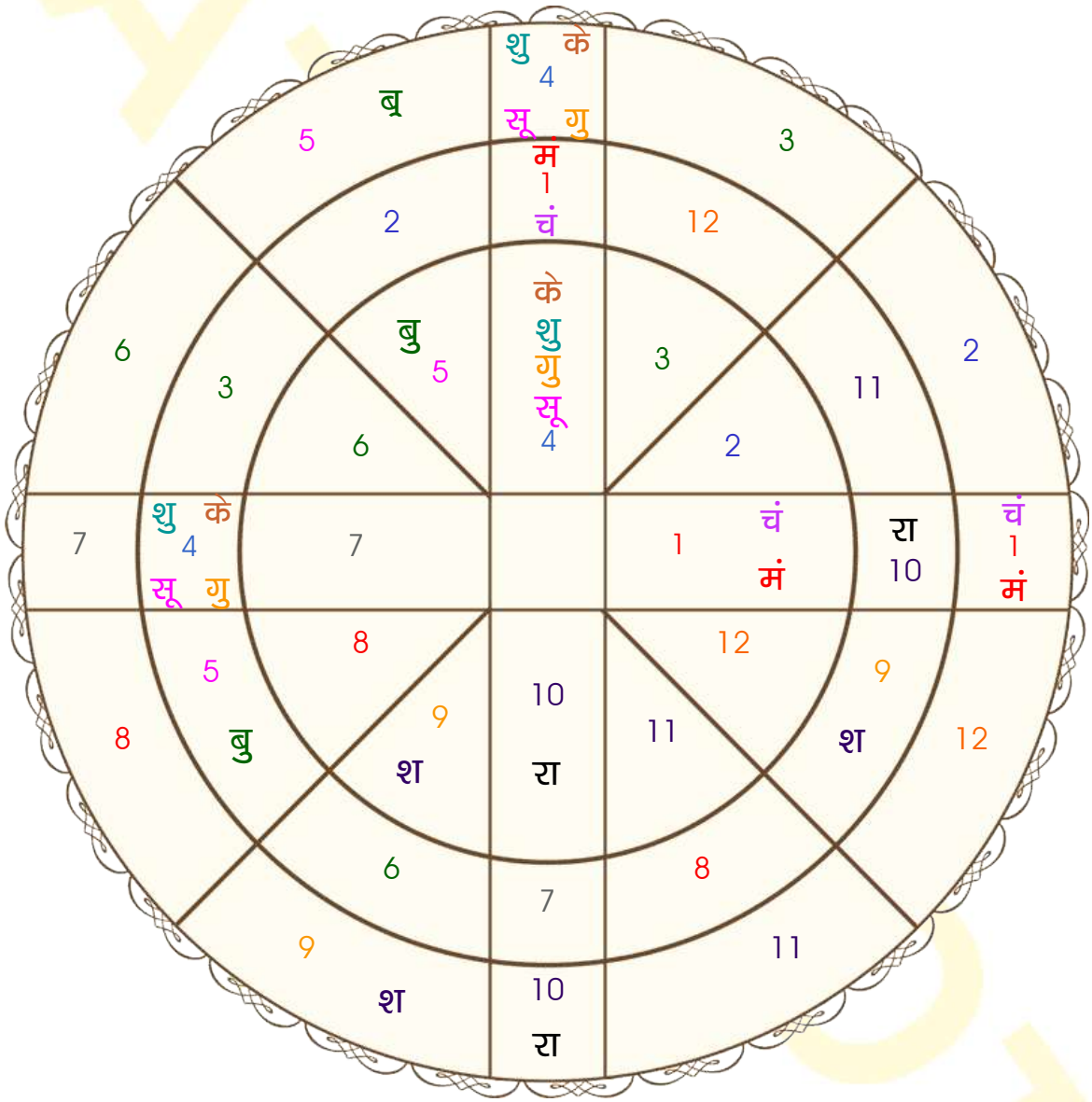

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : शुक्र 13 वर्ष 6 मास 29 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कर्क	26:22:54	चंद्र	बुध	गुरु	शनि
चंद्र		मेष	17:36:47	मंगल	शुक्र	मंगल	शनि
मंगल		मेष	26:18:39	मंगल	शुक्र	केतु	राहु
बुध		सिंह	23:42:27	सूर्य	शुक्र	शनि	राहु
गुरु		कर्क	05:14:20	चंद्र	शनि	शनि	गुरु
शुक्र		कर्क	05:15:19	चंद्र	शनि	शनि	गुरु
शनि	व	धनु	26:22:58	गुरु	शुक्र	केतु	गुरु
राहु	व	मक	13:36:12	शनि	चंद्र	राहु	सूर्य
केतु	व	कर्क	13:36:12	चंद्र	शनि	राहु	शनि
हर्ष	व	धनु	12:24:35	गुरु	केतु	बुध	मंगल
नेप	व	धनु	18:37:10	गुरु	शुक्र	राहु	गुरु
प्लूटो		तुला	21:26:17	शुक्र	गुरु	गुरु	मंगल

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कर्क	21:29:50	चंद्र	बुध	शुक्र	केतु
2	सिंह	16:07:13	सूर्य	शुक्र	सूर्य	शुक्र
3	कन्या	14:50:38	बुध	चंद्र	गुरु	शुक्र
4	तुला	17:11:24	शुक्र	राहु	शुक्र	बुध
5	वृश्चि	20:28:25	मंगल	बुध	शुक्र	गुरु
6	धनु	22:09:04	गुरु	शुक्र	शनि	शनि
7	मक	21:29:50	शनि	चंद्र	शुक्र	राहु
8	कुंभ	16:07:13	शनि	राहु	शुक्र	राहु
9	मीन	14:50:38	गुरु	शनि	राहु	मंगल
10	मेष	17:11:24	मंगल	शुक्र	चंद्र	शुक्र
11	वृष	20:28:25	शुक्र	चंद्र	शुक्र	शुक्र
12	मिथु	22:09:04	बुध	गुरु	शनि	बुध

के.पी. अयनांश : 23:37:21

फॉरच्युना : मेष 12:43:43

लग्न कुंडली

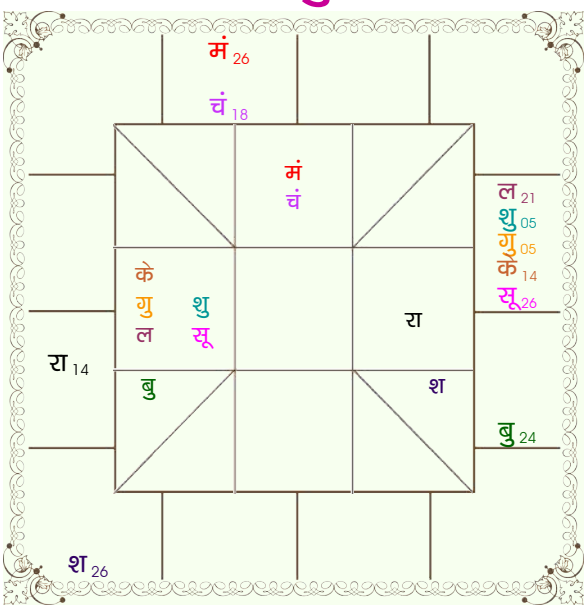

भाव कुंडली

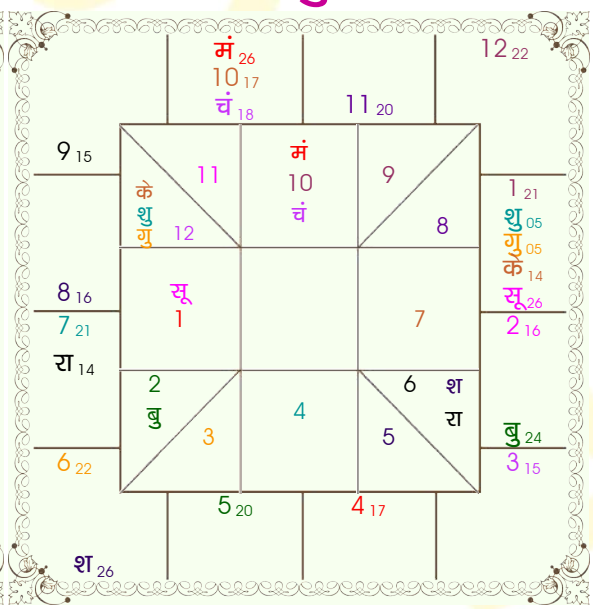

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, चंद्र- राहु-
2	सूर्य+ बुध,
3	सूर्य- बुध-
4	चंद्र- मंगल- बुध- शुक्र- शनि-
5	मंगल-
6	गुरु+ शुक्र, शनि, राहु, केतु,
7	गुरु- शुक्र- शनि- केतु-
8	गुरु- शुक्र- शनि- केतु-
9	गुरु-
10	चंद्र, मंगल, राहु,
11	चंद्र- मंगल- बुध- शुक्र- शनि-
12	सूर्य- चंद्र, मंगल, बुध+ गुरु, शुक्र, शनि, केतु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 2+ 3- 12-
चंद्र	1- 4- 10, 11- 12,
मंगल	4- 5- 10, 11- 12,
बुध	2, 3- 4- 11- 12+
गुरु	6+ 7- 8- 9- 12,
शुक्र	4- 6, 7- 8- 11- 12,
शनि	4- 6, 7- 8- 11- 12,
राहु	1- 6, 10,
केतु	6, 7- 8- 12,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	बुध
लग्न राशि स्वामी	चन्द्र
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	मंगल

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

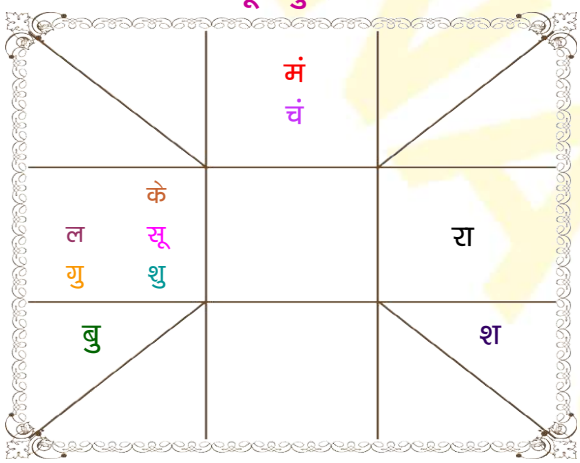

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

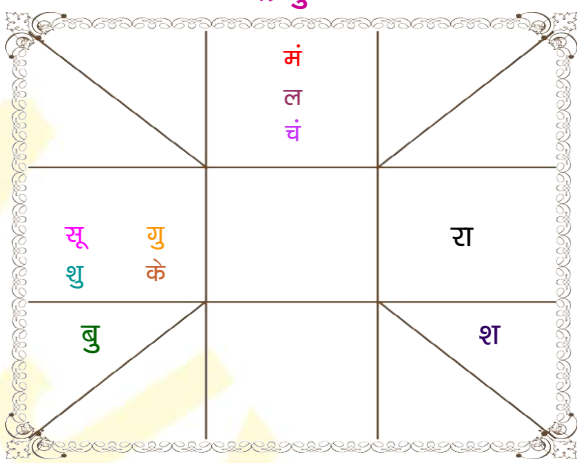

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

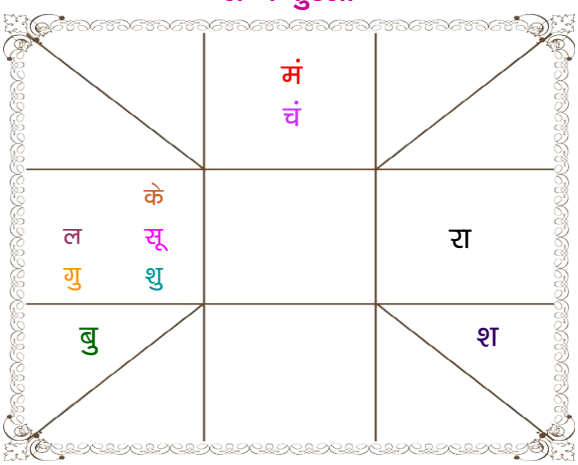

देह विचारः

होरा कुंडली

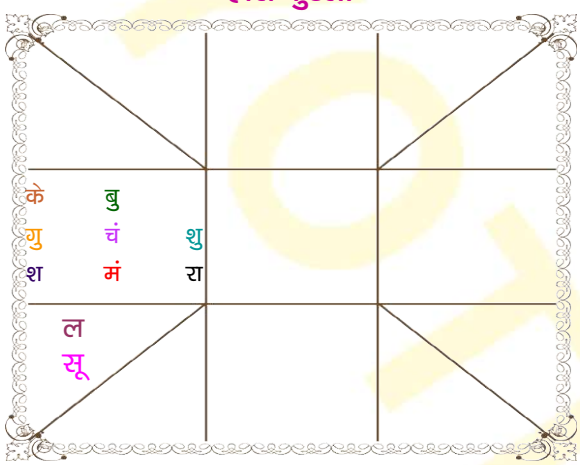

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

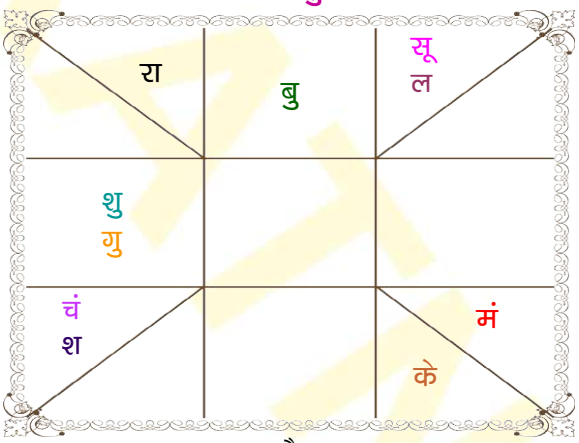

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

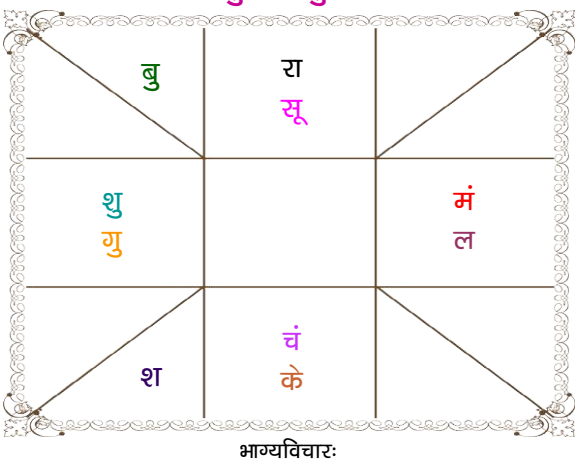

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

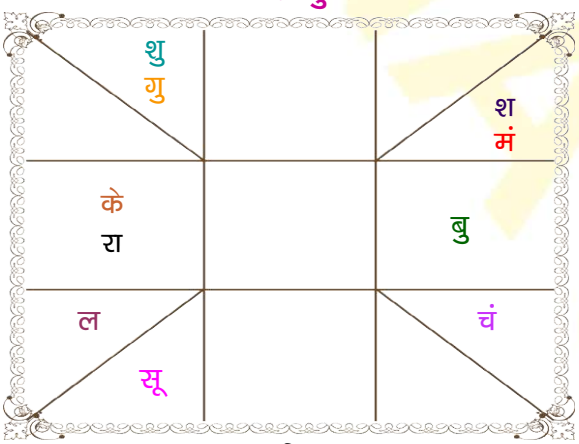

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

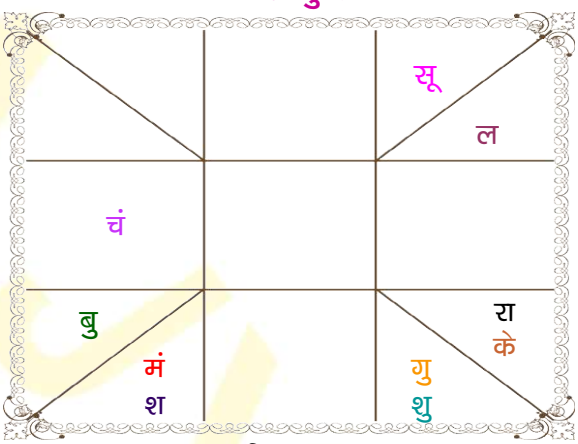

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

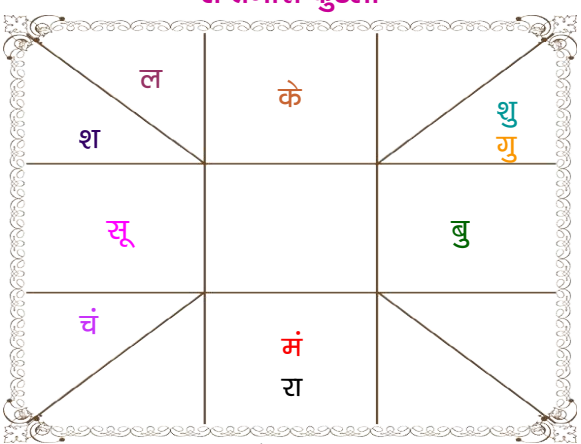

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

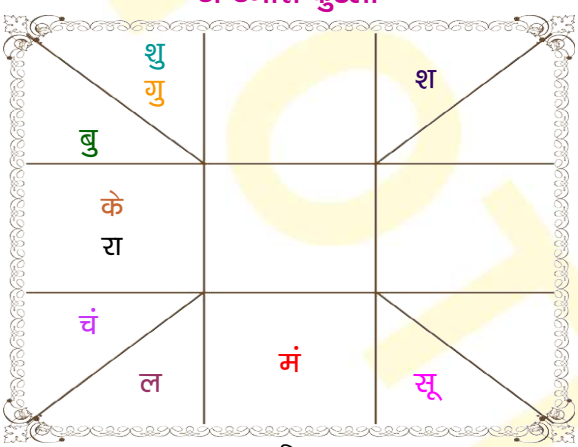

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

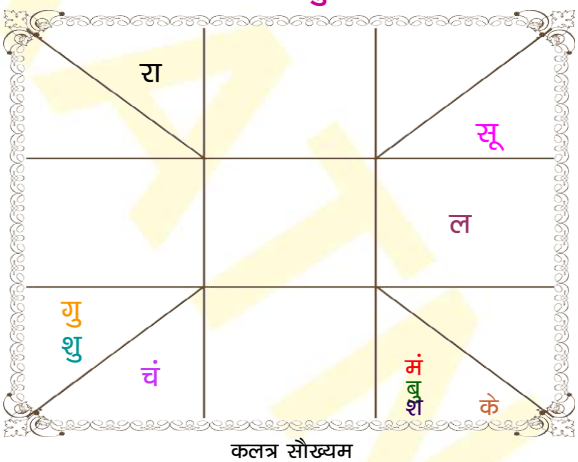

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

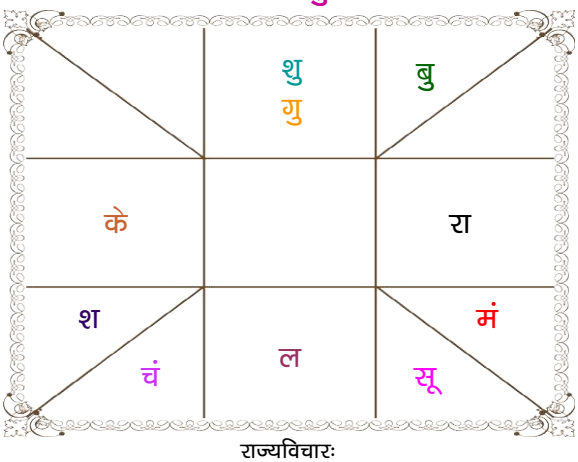

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

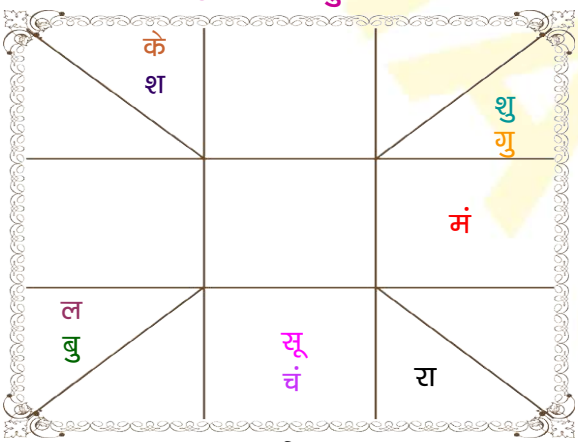

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

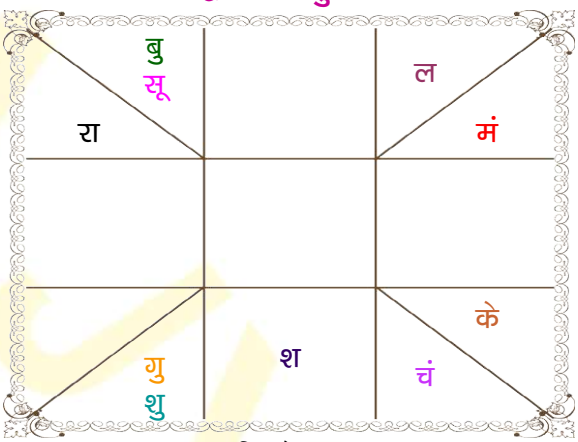

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

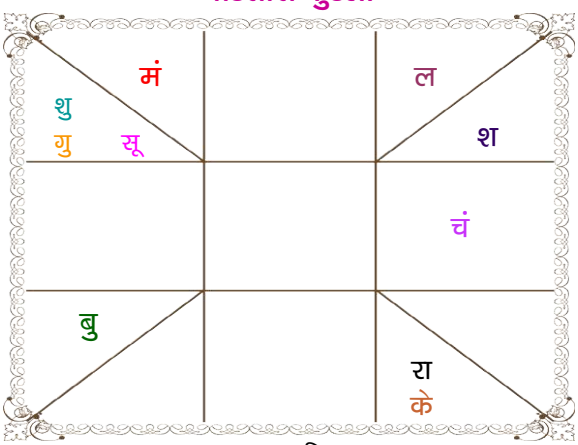

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

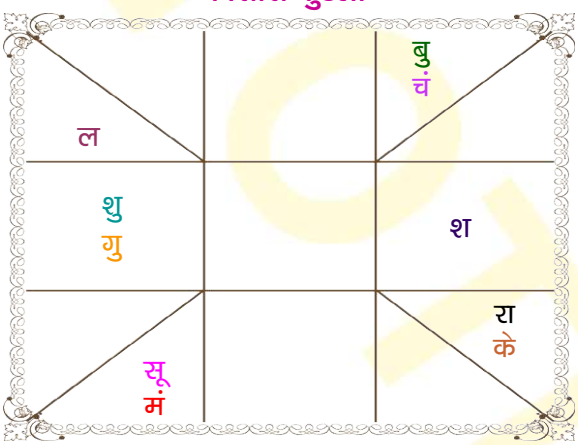

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

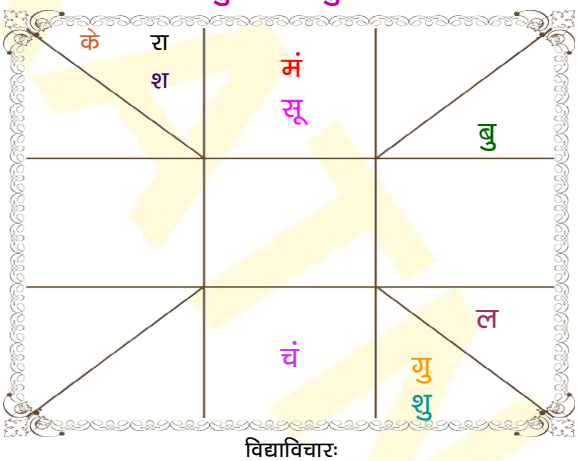

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

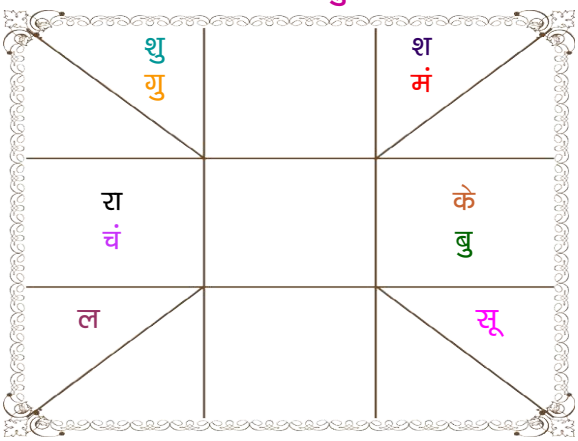

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

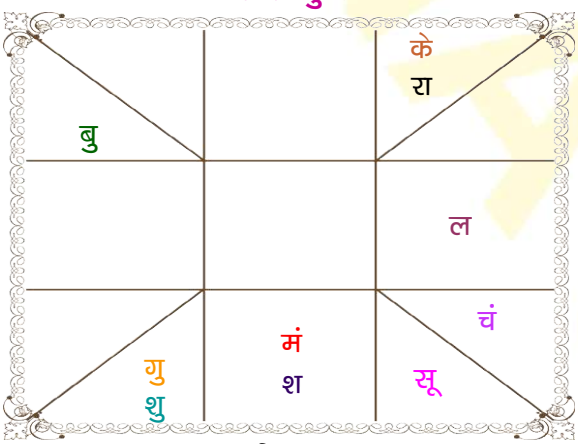

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

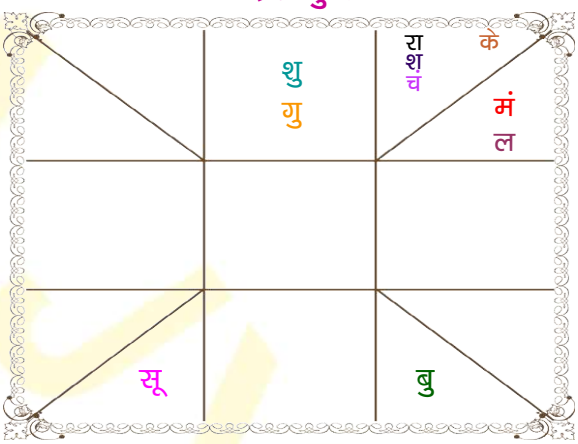

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

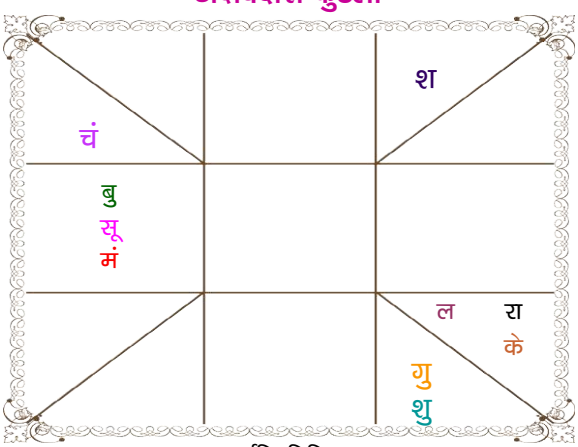

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

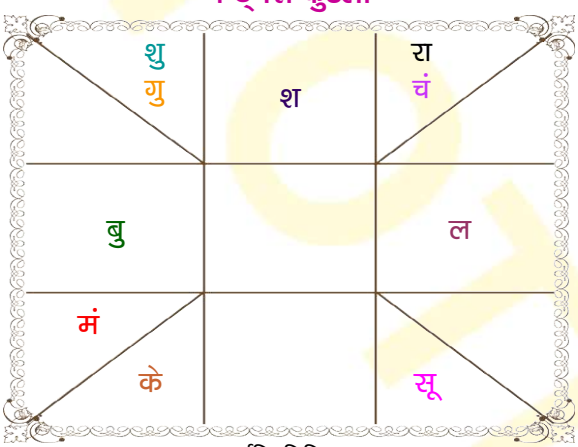

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कर्क	कर्क	मेष	मेष	सिंह	कर्क	कर्क	धनु	मक	कर्क
होरा	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	मीन	मीन	सिंह	धनु	मेष	कर्क	कर्क	सिंह	वृष	वृश्चि
चतुर्थांश	मक	मेष	तुला	मक	वृष	कर्क	कर्क	कन्या	मेष	तुला
सप्तमांश	वृष	कर्क	सिंह	तुला	मक	कुंभ	कुंभ	मिथु	तुला	मेष
नवमांश	मक	कुंभ	कन्या	वृश्चि	वृश्चि	सिंह	सिंह	वृश्चि	वृष	वृश्चि
दशमांश	तुला	वृश्चि	कन्या	धनु	मीन	मेष	मेष	सिंह	मक	कर्क
द्वादशांश	मीन	वृष	वृश्चि	कुंभ	वृष	कन्या	कन्या	तुला	मिथु	धनु
षोडशांश	मीन	मिथु	मक	वृष	सिंह	मिथु	मिथु	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि
विंशांश	मिथु	कन्या	मीन	कन्या	मीन	कर्क	कर्क	मक	धनु	धनु
चतुर्विंशांश	धनु	मेष	तुला	मेष	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि	वृष	वृष	वृष
सप्तविंशांश	सिंह	धनु	कर्क	मीन	मक	वृष	वृष	मीन	कर्क	मक
त्रिंशांश	मक	वृश्चि	धनु	तुला	मिथु	कन्या	कन्या	तुला	मीन	मीन
खवेदांश	कुंभ	कन्या	मीन	कुंभ	वृश्चि	मेष	मेष	मीन	मीन	मीन
अक्षवेदांश	धनु	कर्क	मिथु	कर्क	कर्क	वृश्चि	वृश्चि	मीन	धनु	धनु
षष्ट्यंश	मक	वृश्चि	मीन	सिंह	कर्क	वृष	वृष	मेष	मीन	कन्या

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
मंगल	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
बुध	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
गुरु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	5 कन्दुक
शुक्र	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
राहु	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---
केतु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	5 कन्दुक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.05	11.65	17.05	11.85	14.80	9.95	6.35	11.95	13.15
सप्तवर्ग	12.78	12.40	16.53	11.30	13.63	10.08	6.88	11.55	13.55
दशवर्ग	15.38	12.68	16.35	11.23	11.53	14.30	7.55	10.60	13.20
षोडशवर्ग	14.78	12.20	16.43	11.08	12.20	13.40	8.13	10.55	13.03

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	शत्रु	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	सम	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	25	55	31	53	60	27	38
सप्तवर्गज बल	109	105	139	88	94	77	32
ओजयुग्मक बल	15	15	15	15	15	15	15
केन्द्र बल	60	60	60	30	60	60	15
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	15	0	0
कुल स्थान बल	208	235	244	186	244	179	100
कुल दिग्बल	27	0	57	49	55	26	52
नतोन्नत बल	25	35	35	60	25	25	35
पक्ष बल	27	66	27	33	33	33	27
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
अब्द बल	0	15	0	0	0	0	0
मास बल	0	30	0	0	0	0	0
वार बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	99	10	53	37	56	56	58
युद्ध बल	0	0	0	0	1	-1	0
कुल कालबल	196	156	175	190	175	114	120
कुल चेष्टाबल	0	0	21	40	9	13	50
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-16	-1	-2	-9	-12	-12	27
कुल षट्बल	475	441	512	482	505	363	357
रूप षट्बल	7.9	7.4	8.5	8.0	8.4	6.0	5.9
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.6	1.2	1.7	1.1	1.3	1.1	1.2
संबंधित पद	2	4	1	6	3	7	5

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	32.63	42.49	25.14	46.26	23.08	18.78	43.51
कष्ट फल	24.30	11.83	34.01	11.80	1.50	39.24	14.91

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	441	475	482	363	512	505	357	357	505	512	363	482
भावदिग्बल	30	20	40	30	40	20	30	10	10	60	50	50
भावदृष्टि बल	-11	-4	27	44	81	62	53	84	78	31	15	-9
कुल भाव बल	460	491	549	436	633	588	440	451	593	603	428	524
रूप भाव बल	7.7	8.2	9.1	7.3	10.6	9.8	7.3	7.5	9.9	10.0	7.1	8.7
संबंधित पद	8	7	5	11	1	4	10	9	3	2	12	6

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कर्क	21:23:23	--	--	आश्लेषा	2	9
गुलिक	गु	मीन	24:38:28	--	--	रेवती	3	27
काल	का	मेष	20:48:46	--	--	भरणी	3	2
मृत्यु	मृ	मिथु	03:47:41	--	--	मृगशिरा	4	5
यमघंटक	यम	कर्क	09:10:35	--	--	पुष्य	2	8
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मिथु	21:38:57	--	मूल	पुनर्वसु	1	7
धूम	धू	धनु	09:36:27	--	--	मूल	3	19
व्यतिपात	व्य	कर्क	20:23:33	--	--	आश्लेषा	2	9
परिवेश	परि	मक	20:23:33	--	--	श्रवण	4	22
इन्द्रचाप	इ	मिथु	09:36:27	नीच	--	आर्द्रा	1	6
उपकेतु	उप	मिथु	26:16:27	--	--	पुनर्वसु	2	7

प्राणपद	:	मेष	24:08:07	कारकाँश लग्न	:	वृश्चि	26:28:36
भाव लग्न	:	कर्क	16:46:58	होरा लग्न	:	कर्क	12:10:33
घटी लग्न	:	कर्क	03:14:22	वर्णद लग्न	:	सिंह	26:26:05

उपग्रह कुंडली

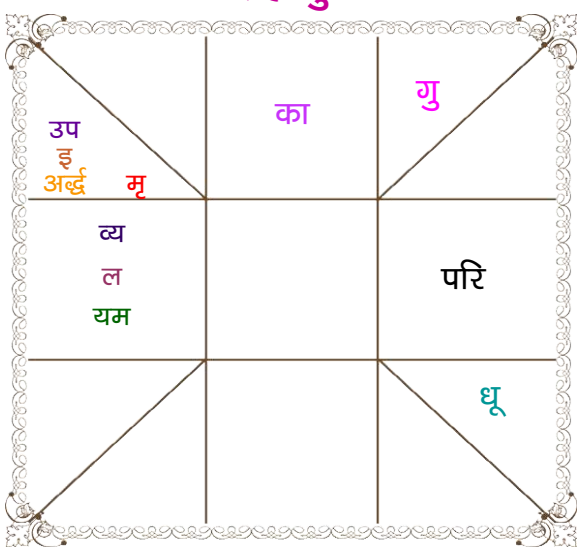

आरूढ़ कुंडली

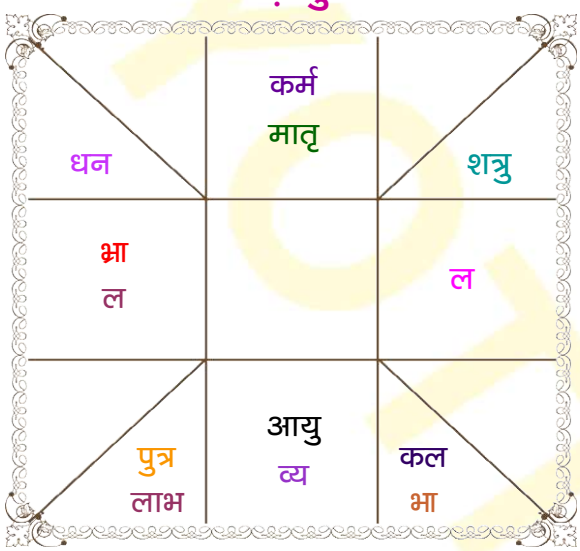

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृ	शि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8	
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4	
मंगल	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8	
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8	
शुक्र	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	3	
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7	
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4	
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	6	
कुल	4	2	3	5	2	6	6	3	3	4	5	5	48	

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	शि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4	
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7	
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	6	
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	6	
शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	7	
बुध	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	8	
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7	
लग्न	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4	
कुल	6	7	3	1	3	5	5	2	4	5	6	2	49	

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	शि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7	
गुरु	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	4	
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7	
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5	
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4	
बुध	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4	
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3	
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5	
कुल	4	5	5	3	1	4	3	2	6	2	3	1	39	

बुध का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृ	शि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	कुल
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8	
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4	
मंगल	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8	
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5	
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8	
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8	
चंद्र	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6	
लग्न	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7	
कुल	4	3	5	4	6	4	5	3	3	7	4	6	54	

गुरु का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृ	शि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4	
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8	
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	7	
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9	
शुक्र	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	6	
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8	
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5	
लग्न	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9	
कुल	4	6	3	5	5	4	5	5	3	7	8	1	56	

शुक्र का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृ	शि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	7	
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5	
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	6	
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3	
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9	
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5	
चंद्र	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	9	
लग्न	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8	
कुल	5	4	4	4	4	3	1	7	6	5	5	4	52	

शनि का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	शि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4	
गुरु	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4	
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6	
सूर्य	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7	
शुक्र	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3	
बुध	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	6	
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	3	
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6	
कुल	3	3	4	2	4	6	5	3	2	3	3	1	39	

लग्न का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृ	शि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6	
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9	
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5	
सूर्य	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	6	
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	7	
बुध	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7	
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	5	
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4	
कुल	2	3	7	4	3	4	4	4	5	4	5	4	49	

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	6	5	3	2	3	3	1	3	3	4	2	39
गुरु	7	8	1	4	6	3	5	5	4	5	5	3	56
मंगल	4	5	5	3	1	4	3	2	6	2	3	1	39
सूर्य	4	5	5	4	2	3	5	2	6	6	3	3	48
शुक्र	5	5	4	5	4	4	4	4	3	1	7	6	52
बुध	3	7	4	6	4	3	5	4	6	4	5	3	54
चंद्र	6	7	3	1	3	5	5	2	4	5	6	2	49
बिन्दु	33	43	27	26	22	25	30	20	32	26	33	20	337
रेखा	23	13	29	30	34	31	26	36	24	30	23	36	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	3	2	2	0	0	0	0	1	0	1	1	12
गुरु	3	5	0	1	2	0	4	2	0	2	4	0	23
मंगल	3	3	2	2	0	2	0	1	5	0	0	0	18
सूर्य	2	2	2	2	0	0	2	0	4	3	0	1	18
शुक्र	2	4	0	1	1	3	0	0	0	0	3	2	16
बुध	0	4	0	3	1	0	1	1	3	1	1	0	15
चंद्र	3	2	0	0	0	0	2	1	1	0	3	1	13
रेखा	15	23	6	11	4	5	9	5	14	6	12	5	115

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	3	2	2	0	0	0	0	1	0	1	0	11
गुरु	3	1	0	1	2	0	4	0	0	2	2	0	15
मंगल	3	3	0	2	0	0	0	0	5	0	0	0	13
सूर्य	2	0	2	2	0	0	0	0	4	3	0	0	13
शुक्र	2	4	0	1	1	3	0	0	0	0	3	2	16
बुध	0	3	0	3	1	0	1	1	3	0	0	0	12
चंद्र	3	0	0	0	0	0	0	0	1	0	3	0	7
रेखा	15	14	4	11	4	3	5	1	14	5	9	2	87

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	89	63	104	94	115	140	88
ग्रह पिंड	90	44	108	86	71	53	75
शोध्य पिंड	179	107	212	180	186	193	163

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

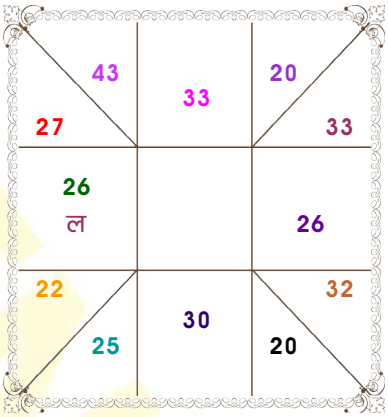

सूर्य का अष्टकवर्ग

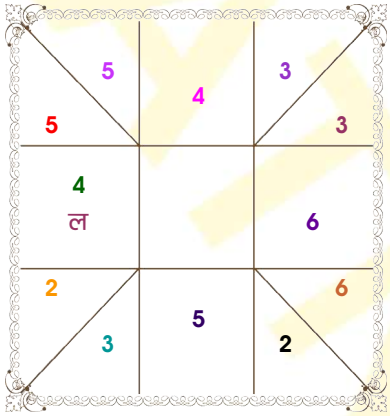

चंद्र का अष्टकवर्ग

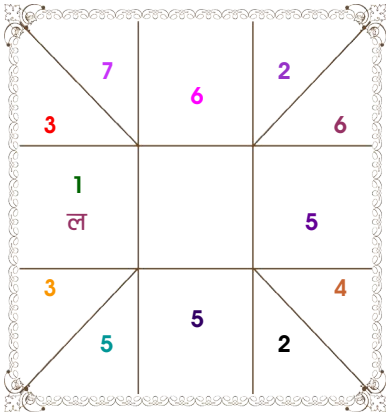

मंगल का अष्टकवर्ग

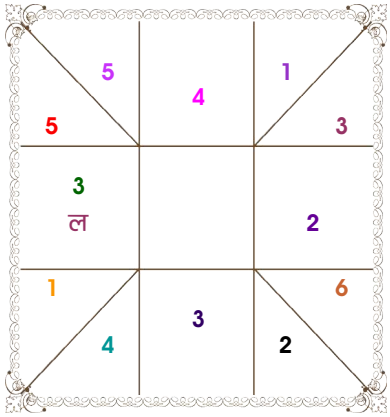

बुध का अष्टकवर्ग

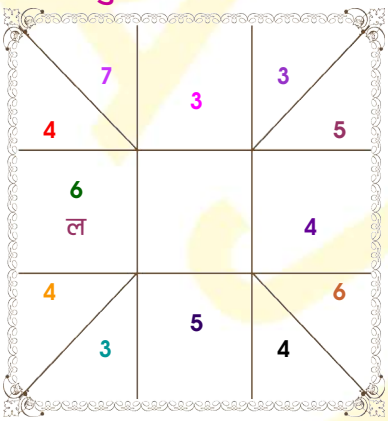

गुरू का अष्टकवर्ग

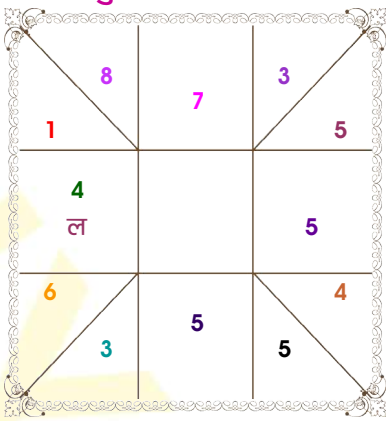

शुक्र का अष्टकवर्ग

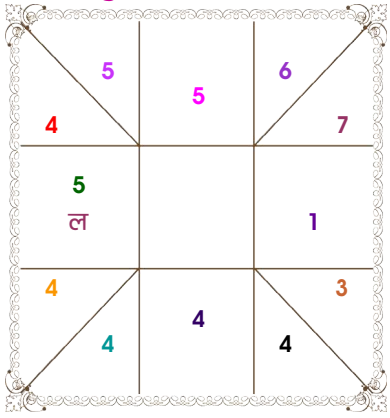

शनि का अष्टकवर्ग

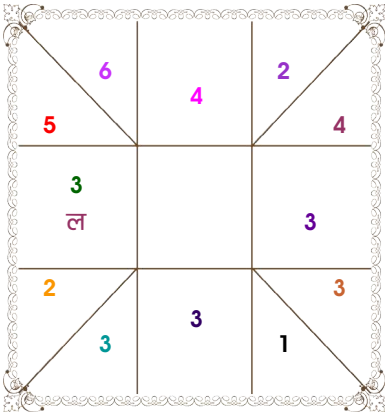

लग्न का अष्टकवर्ग

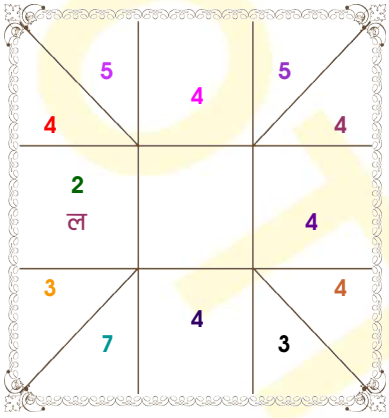

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 13 वर्ष 8 मास 27 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
13/08/1990		10/05/2004		10/05/2010		10/05/2020		11/05/2027	
10/05/2004		10/05/2010		10/05/2020		11/05/2027		10/05/2045	
	00/00/0000	सूर्य	27/08/2004	चंद्र	11/03/2011	मंगल	06/10/2020	राहु	21/01/2030
	00/00/0000	चंद्र	26/02/2005	मंगल	10/10/2011	राहु	24/10/2021	गुरु	15/06/2032
	13/08/1990	मंगल	04/07/2005	राहु	10/04/2013	गुरु	30/09/2022	शनि	22/04/2035
मंगल	10/07/1991	राहु	29/05/2006	गुरु	10/08/2014	शनि	09/11/2023	बुध	09/11/2037
राहु	10/07/1994	गुरु	17/03/2007	शनि	10/03/2016	बुध	05/11/2024	केतु	27/11/2038
गुरु	10/03/1997	शनि	27/02/2008	बुध	09/08/2017	केतु	04/04/2025	शुक्र	27/11/2041
शनि	10/05/2000	बुध	02/01/2009	केतु	10/03/2018	शुक्र	04/06/2026	सूर्य	22/10/2042
बुध	11/03/2003	केतु	10/05/2009	शुक्र	09/11/2019	सूर्य	10/10/2026	चंद्र	22/04/2044
केतु	10/05/2004	शुक्र	10/05/2010	सूर्य	10/05/2020	चंद्र	11/05/2027	मंगल	10/05/2045

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
10/05/2045		10/05/2061		10/05/2080		10/05/2097		11/05/2104	
10/05/2061		10/05/2080		10/05/2097		11/05/2104		00/00/0000	
गुरु	28/06/2047	शनि	13/05/2064	बुध	06/10/2082	केतु	06/10/2097	शुक्र	10/09/2107
शनि	09/01/2050	बुध	21/01/2067	केतु	04/10/2083	शुक्र	06/12/2098	सूर्य	10/09/2108
बुध	15/04/2052	केतु	01/03/2068	शुक्र	04/08/2086	सूर्य	13/04/2099	चंद्र	11/05/2110
केतु	22/03/2053	शुक्र	01/05/2071	सूर्य	10/06/2087	चंद्र	12/11/2099	मंगल	14/08/2110
शुक्र	21/11/2055	सूर्य	12/04/2072	चंद्र	08/11/2088	मंगल	10/04/2100		00/00/0000
सूर्य	09/09/2056	चंद्र	12/11/2073	मंगल	06/11/2089	राहु	29/04/2101		00/00/0000
चंद्र	09/01/2058	मंगल	22/12/2074	राहु	25/05/2092	गुरु	05/04/2102		00/00/0000
मंगल	15/12/2058	राहु	28/10/2077	गुरु	31/08/2094	शनि	15/05/2103		00/00/0000
राहु	10/05/2061	गुरु	10/05/2080	शनि	10/05/2097	बुध	11/05/2104		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 13 वर्ष 8 मा 23 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध	
13/08/1990		10/07/1991		10/07/1994		10/03/1997		10/05/2000	
10/07/1991		10/07/1994		10/03/1997		10/05/2000		11/03/2003	
	00/00/0000	राहु	22/12/1991	गुरु	17/11/1994	शनि	09/09/1997	बुध	03/10/2000
	13/08/1990	गुरु	16/05/1992	शनि	20/04/1995	बुध	20/02/1998	केतु	03/12/2000
गुरु	03/10/1990	शनि	05/11/1992	बुध	05/09/1995	केतु	29/04/1998	शुक्र	24/05/2001
शनि	09/12/1990	बुध	10/04/1993	केतु	01/11/1995	शुक्र	07/11/1998	सूर्य	15/07/2001
बुध	08/02/1991	केतु	13/06/1993	शुक्र	11/04/1996	सूर्य	04/01/1999	चंद्र	09/10/2001
केतु	05/03/1991	शुक्र	12/12/1993	सूर्य	30/05/1996	चंद्र	11/04/1999	मंगल	09/12/2001
शुक्र	15/05/1991	सूर्य	05/02/1994	चंद्र	19/08/1996	मंगल	17/06/1999	राहु	13/05/2002
सूर्य	05/06/1991	चंद्र	07/05/1994	मंगल	15/10/1996	राहु	08/12/1999	गुरु	28/09/2002
चंद्र	10/07/1991	मंगल	10/07/1994	राहु	10/03/1997	गुरु	10/05/2000	शनि	11/03/2003

शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु	
11/03/2003		10/05/2004		27/08/2004		26/02/2005		04/07/2005	
10/05/2004		27/08/2004		26/02/2005		04/07/2005		29/05/2006	
केतु	05/04/2003	सूर्य	15/05/2004	चंद्र	12/09/2004	मंगल	05/03/2005	राहु	22/08/2005
शुक्र	15/06/2003	चंद्र	24/05/2004	मंगल	22/09/2004	राहु	25/03/2005	गुरु	05/10/2005
सूर्य	06/07/2003	मंगल	31/05/2004	राहु	20/10/2004	गुरु	11/04/2005	शनि	26/11/2005
चंद्र	10/08/2003	राहु	16/06/2004	गुरु	13/11/2004	शनि	01/05/2005	बुध	12/01/2006
मंगल	04/09/2003	गुरु	01/07/2004	शनि	12/12/2004	बुध	19/05/2005	केतु	31/01/2006
राहु	07/11/2003	शनि	18/07/2004	बुध	07/01/2005	केतु	27/05/2005	शुक्र	27/03/2006
गुरु	03/01/2004	बुध	03/08/2004	केतु	17/01/2005	शुक्र	17/06/2005	सूर्य	12/04/2006
शनि	10/03/2004	केतु	09/08/2004	शुक्र	17/02/2005	सूर्य	23/06/2005	चंद्र	09/05/2006
बुध	10/05/2004	शुक्र	27/08/2004	सूर्य	26/02/2005	चंद्र	04/07/2005	मंगल	29/05/2006

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
29/05/2006		17/03/2007		27/02/2008		02/01/2009		10/05/2009	
17/03/2007		27/02/2008		02/01/2009		10/05/2009		10/05/2010	
गुरु	07/07/2006	शनि	11/05/2007	बुध	11/04/2008	केतु	10/01/2009	शुक्र	10/07/2009
शनि	22/08/2006	बुध	29/06/2007	केतु	29/04/2008	शुक्र	31/01/2009	सूर्य	28/07/2009
बुध	02/10/2006	केतु	19/07/2007	शुक्र	20/06/2008	सूर्य	06/02/2009	चंद्र	28/08/2009
केतु	19/10/2006	शुक्र	15/09/2007	सूर्य	05/07/2008	चंद्र	17/02/2009	मंगल	18/09/2009
शुक्र	07/12/2006	सूर्य	02/10/2007	चंद्र	31/07/2008	मंगल	25/02/2009	राहु	12/11/2009
सूर्य	22/12/2006	चंद्र	31/10/2007	मंगल	18/08/2008	राहु	16/03/2009	गुरु	30/12/2009
चंद्र	15/01/2007	मंगल	20/11/2007	राहु	04/10/2008	गुरु	02/04/2009	शनि	26/02/2010
मंगल	01/02/2007	राहु	12/01/2008	गुरु	14/11/2008	शनि	22/04/2009	बुध	19/04/2010
राहु	17/03/2007	गुरु	27/02/2008	शनि	02/01/2009	बुध	10/05/2009	केतु	10/05/2010

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र	
10/05/2010	
11/03/2011	
चंद्र	05/06/2010
मंगल	22/06/2010
राहु	07/08/2010
गुरु	17/09/2010
शनि	04/11/2010
बुध	17/12/2010
केतु	04/01/2011
शुक्र	23/02/2011
सूर्य	11/03/2011

चंद्र - मंगल	
11/03/2011	
10/10/2011	
मंगल	23/03/2011
राहु	24/04/2011
गुरु	23/05/2011
शनि	25/06/2011
बुध	25/07/2011
केतु	07/08/2011
शुक्र	11/09/2011
सूर्य	22/09/2011
चंद्र	10/10/2011

चंद्र - राहु	
10/10/2011	
10/04/2013	
राहु	31/12/2011
गुरु	13/03/2012
शनि	08/06/2012
बुध	24/08/2012
केतु	25/09/2012
शुक्र	26/12/2012
सूर्य	22/01/2013
चंद्र	09/03/2013
मंगल	10/04/2013

चंद्र - गुरु	
10/04/2013	
10/08/2014	
गुरु	14/06/2013
शनि	30/08/2013
बुध	07/11/2013
केतु	05/12/2013
शुक्र	24/02/2014
सूर्य	21/03/2014
चंद्र	30/04/2014
मंगल	29/05/2014
राहु	10/08/2014

चंद्र - शनि	
10/08/2014	
10/03/2016	
शनि	09/11/2014
बुध	30/01/2015
केतु	05/03/2015
शुक्र	09/06/2015
सूर्य	08/07/2015
चंद्र	25/08/2015
मंगल	28/09/2015
राहु	24/12/2015
गुरु	10/03/2016

चंद्र - बुध	
10/03/2016	
09/08/2017	
बुध	22/05/2016
केतु	21/06/2016
शुक्र	16/09/2016
सूर्य	12/10/2016
चंद्र	24/11/2016
मंगल	24/12/2016
राहु	11/03/2017
गुरु	19/05/2017
शनि	09/08/2017

चंद्र - केतु	
09/08/2017	
10/03/2018	
केतु	22/08/2017
शुक्र	26/09/2017
सूर्य	07/10/2017
चंद्र	25/10/2017
मंगल	06/11/2017
राहु	08/12/2017
गुरु	06/01/2018
शनि	08/02/2018
बुध	10/03/2018

चंद्र - शुक्र	
10/03/2018	
09/11/2019	
शुक्र	20/06/2018
सूर्य	20/07/2018
चंद्र	09/09/2018
मंगल	15/10/2018
राहु	14/01/2019
गुरु	05/04/2019
शनि	10/07/2019
बुध	05/10/2019
केतु	09/11/2019

चंद्र - सूर्य	
09/11/2019	
10/05/2020	
सूर्य	18/11/2019
चंद्र	04/12/2019
मंगल	14/12/2019
राहु	11/01/2020
गुरु	04/02/2020
शनि	04/03/2020
बुध	30/03/2020
केतु	09/04/2020
शुक्र	10/05/2020

मंगल - मंगल	
10/05/2020	
06/10/2020	
मंगल	19/05/2020
राहु	10/06/2020
गुरु	30/06/2020
शनि	23/07/2020
बुध	14/08/2020
केतु	22/08/2020
शुक्र	16/09/2020
सूर्य	24/09/2020
चंद्र	06/10/2020

मंगल - राहु	
06/10/2020	
24/10/2021	
राहु	03/12/2020
गुरु	23/01/2021
शनि	24/03/2021
बुध	18/05/2021
केतु	09/06/2021
शुक्र	12/08/2021
सूर्य	31/08/2021
चंद्र	02/10/2021
मंगल	24/10/2021

मंगल - गुरु	
24/10/2021	
30/09/2022	
गुरु	09/12/2021
शनि	01/02/2022
बुध	21/03/2022
केतु	10/04/2022
शुक्र	06/06/2022
सूर्य	23/06/2022
चंद्र	21/07/2022
मंगल	10/08/2022
राहु	30/09/2022

मंगल - शनि	
30/09/2022	
09/11/2023	
शनि	03/12/2022
बुध	30/01/2023
केतु	22/02/2023
शुक्र	01/05/2023
सूर्य	21/05/2023
चंद्र	24/06/2023
मंगल	18/07/2023
राहु	16/09/2023
गुरु	09/11/2023

मंगल - बुध	
09/11/2023	
05/11/2024	
बुध	31/12/2023
केतु	21/01/2024
शुक्र	21/03/2024
सूर्य	08/04/2024
चंद्र	08/05/2024
मंगल	29/05/2024
राहु	23/07/2024
गुरु	09/09/2024
शनि	05/11/2024

मंगल - केतु	
05/11/2024	
04/04/2025	
केतु	14/11/2024
शुक्र	09/12/2024
सूर्य	16/12/2024
चंद्र	29/12/2024
मंगल	07/01/2025
राहु	29/01/2025
गुरु	18/02/2025
शनि	13/03/2025
बुध	04/04/2025

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
04/04/2025		04/06/2026		10/10/2026		11/05/2027		21/01/2030	
04/06/2026		10/10/2026		11/05/2027		21/01/2030		15/06/2032	
शुक्र	14/06/2025	सूर्य	10/06/2026	चंद्र	27/10/2026	राहु	06/10/2027	गुरु	18/05/2030
सूर्य	05/07/2025	चंद्र	21/06/2026	मंगल	09/11/2026	गुरु	14/02/2028	शनि	03/10/2030
चंद्र	09/08/2025	मंगल	28/06/2026	राहु	11/12/2026	शनि	19/07/2028	बुध	05/02/2031
मंगल	03/09/2025	राहु	17/07/2026	गुरु	08/01/2027	बुध	06/12/2028	केतु	28/03/2031
राहु	06/11/2025	गुरु	03/08/2026	शनि	11/02/2027	केतु	01/02/2029	शुक्र	21/08/2031
गुरु	02/01/2026	शनि	24/08/2026	बुध	13/03/2027	शुक्र	16/07/2029	सूर्य	04/10/2031
शनि	10/03/2026	बुध	11/09/2026	केतु	25/03/2027	सूर्य	03/09/2029	चंद्र	16/12/2031
बुध	10/05/2026	केतु	18/09/2026	शुक्र	30/04/2027	चंद्र	24/11/2029	मंगल	05/02/2032
केतु	04/06/2026	शुक्र	10/10/2026	सूर्य	11/05/2027	मंगल	21/01/2030	राहु	15/06/2032

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
15/06/2032		22/04/2035		09/11/2037		27/11/2038		27/11/2041	
22/04/2035		09/11/2037		27/11/2038		27/11/2041		22/10/2042	
शनि	27/11/2032	बुध	01/09/2035	केतु	01/12/2037	शुक्र	29/05/2039	सूर्य	13/12/2041
बुध	24/04/2033	केतु	26/10/2035	शुक्र	03/02/2038	सूर्य	23/07/2039	चंद्र	10/01/2042
केतु	23/06/2033	शुक्र	29/03/2036	सूर्य	22/02/2038	चंद्र	22/10/2039	मंगल	29/01/2042
शुक्र	14/12/2033	सूर्य	14/05/2036	चंद्र	26/03/2038	मंगल	25/12/2039	राहु	19/03/2042
सूर्य	04/02/2034	चंद्र	31/07/2036	मंगल	18/04/2038	राहु	06/06/2040	गुरु	02/05/2042
चंद्र	02/05/2034	मंगल	23/09/2036	राहु	14/06/2038	गुरु	30/10/2040	शनि	23/06/2042
मंगल	01/07/2034	राहु	10/02/2037	गुरु	04/08/2038	शनि	22/04/2041	बुध	09/08/2042
राहु	05/12/2034	गुरु	14/06/2037	शनि	04/10/2038	बुध	24/09/2041	केतु	28/08/2042
गुरु	22/04/2035	शनि	09/11/2037	बुध	27/11/2038	केतु	27/11/2041	शुक्र	22/10/2042

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
22/10/2042		22/04/2044		10/05/2045		28/06/2047		09/01/2050	
22/04/2044		10/05/2045		28/06/2047		09/01/2050		15/04/2052	
चंद्र	06/12/2042	मंगल	14/05/2044	गुरु	22/08/2045	शनि	22/11/2047	बुध	06/05/2050
मंगल	07/01/2043	राहु	10/07/2044	शनि	23/12/2045	बुध	01/04/2048	केतु	23/06/2050
राहु	31/03/2043	गुरु	31/08/2044	बुध	13/04/2046	केतु	25/05/2048	शुक्र	08/11/2050
गुरु	12/06/2043	शनि	30/10/2044	केतु	28/05/2046	शुक्र	26/10/2048	सूर्य	20/12/2050
शनि	06/09/2043	बुध	24/12/2044	शुक्र	05/10/2046	सूर्य	11/12/2048	चंद्र	27/02/2051
बुध	23/11/2043	केतु	15/01/2045	सूर्य	13/11/2046	चंद्र	26/02/2049	मंगल	16/04/2051
केतु	25/12/2043	शुक्र	20/03/2045	चंद्र	17/01/2047	मंगल	21/04/2049	राहु	18/08/2051
शुक्र	25/03/2044	सूर्य	08/04/2045	मंगल	03/03/2047	राहु	07/09/2049	गुरु	06/12/2051
सूर्य	22/04/2044	चंद्र	10/05/2045	राहु	28/06/2047	गुरु	09/01/2050	शनि	15/04/2052

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
15/04/2052		22/03/2053		21/11/2055		09/09/2056		09/01/2058	
22/03/2053		21/11/2055		09/09/2056		09/01/2058		15/12/2058	
केतु	05/05/2052	शुक्र	01/09/2053	सूर्य	06/12/2055	चंद्र	19/10/2056	मंगल	28/01/2058
शुक्र	01/07/2052	सूर्य	19/10/2053	चंद्र	30/12/2055	मंगल	17/11/2056	राहु	21/03/2058
सूर्य	18/07/2052	चंद्र	09/01/2054	मंगल	16/01/2056	राहु	29/01/2057	गुरु	05/05/2058
चंद्र	16/08/2052	मंगल	06/03/2054	राहु	29/02/2056	गुरु	04/04/2057	शनि	28/06/2058
मंगल	05/09/2052	राहु	31/07/2054	गुरु	08/04/2056	शनि	20/06/2057	बुध	15/08/2058
राहु	26/10/2052	गुरु	07/12/2054	शनि	24/05/2056	बुध	28/08/2057	केतु	04/09/2058
गुरु	10/12/2052	शनि	11/05/2055	बुध	05/07/2056	केतु	25/09/2057	शुक्र	31/10/2058
शनि	02/02/2053	बुध	26/09/2055	केतु	22/07/2056	शुक्र	15/12/2057	सूर्य	17/11/2058
बुध	22/03/2053	केतु	21/11/2055	शुक्र	09/09/2056	सूर्य	09/01/2058	चंद्र	15/12/2058

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
15/12/2058		10/05/2061		13/05/2064		21/01/2067		01/03/2068	
10/05/2061		13/05/2064		21/01/2067		01/03/2068		01/05/2071	
राहु	26/04/2059	शनि	31/10/2061	बुध	29/09/2064	केतु	14/02/2067	शुक्र	10/09/2068
गुरु	21/08/2059	बुध	05/04/2062	केतु	26/11/2064	शुक्र	22/04/2067	सूर्य	06/11/2068
शनि	07/01/2060	केतु	08/06/2062	शुक्र	08/05/2065	सूर्य	12/05/2067	चंद्र	11/02/2069
बुध	10/05/2060	शुक्र	08/12/2062	सूर्य	27/06/2065	चंद्र	15/06/2067	मंगल	19/04/2069
केतु	30/06/2060	सूर्य	01/02/2063	चंद्र	16/09/2065	मंगल	09/07/2067	राहु	10/10/2069
शुक्र	23/11/2060	चंद्र	03/05/2063	मंगल	13/11/2065	राहु	07/09/2067	गुरु	13/03/2070
सूर्य	06/01/2061	मंगल	07/07/2063	राहु	09/04/2066	गुरु	31/10/2067	शनि	12/09/2070
चंद्र	20/03/2061	राहु	18/12/2063	गुरु	18/08/2066	शनि	03/01/2068	बुध	23/02/2071
मंगल	10/05/2061	गुरु	13/05/2064	शनि	21/01/2067	बुध	01/03/2068	केतु	01/05/2071

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
01/05/2071		12/04/2072		12/11/2073		22/12/2074		28/10/2077	
12/04/2072		12/11/2073		22/12/2074		28/10/2077		10/05/2080	
सूर्य	19/05/2071	चंद्र	31/05/2072	मंगल	05/12/2073	राहु	27/05/2075	गुरु	28/02/2078
चंद्र	17/06/2071	मंगल	03/07/2072	राहु	04/02/2074	गुरु	13/10/2075	शनि	24/07/2078
मंगल	07/07/2071	राहु	28/09/2072	गुरु	30/03/2074	शनि	25/03/2076	बुध	03/12/2078
राहु	28/08/2071	गुरु	14/12/2072	शनि	02/06/2074	बुध	20/08/2076	केतु	25/01/2079
गुरु	13/10/2071	शनि	16/03/2073	बुध	30/07/2074	केतु	20/10/2076	शुक्र	29/06/2079
शनि	07/12/2071	बुध	06/06/2073	केतु	22/08/2074	शुक्र	11/04/2077	सूर्य	14/08/2079
बुध	25/01/2072	केतु	09/07/2073	शुक्र	29/10/2074	सूर्य	02/06/2077	चंद्र	30/10/2079
केतु	15/02/2072	शुक्र	14/10/2073	सूर्य	18/11/2074	चंद्र	28/08/2077	मंगल	23/12/2079
शुक्र	12/04/2072	सूर्य	12/11/2073	चंद्र	22/12/2074	मंगल	28/10/2077	राहु	10/05/2080

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
10/05/2080		06/10/2082		04/10/2083		04/08/2086		10/06/2087	
06/10/2082		04/10/2083		04/08/2086		10/06/2087		08/11/2088	
बुध	11/09/2080	केतु	28/10/2082	शुक्र	24/03/2084	सूर्य	19/08/2086	चंद्र	23/07/2087
केतु	02/11/2080	शुक्र	27/12/2082	सूर्य	15/05/2084	चंद्र	14/09/2086	मंगल	22/08/2087
शुक्र	28/03/2081	सूर्य	14/01/2083	चंद्र	09/08/2084	मंगल	02/10/2086	राहु	08/11/2087
सूर्य	11/05/2081	चंद्र	13/02/2083	मंगल	09/10/2084	राहु	18/11/2086	गुरु	16/01/2088
चंद्र	24/07/2081	मंगल	06/03/2083	राहु	13/03/2085	गुरु	29/12/2086	शनि	07/04/2088
मंगल	13/09/2081	राहु	30/04/2083	गुरु	29/07/2085	शनि	16/02/2087	बुध	19/06/2088
राहु	23/01/2082	गुरु	17/06/2083	शनि	09/01/2086	बुध	01/04/2087	केतु	19/07/2088
गुरु	20/05/2082	शनि	13/08/2083	बुध	04/06/2086	केतु	19/04/2087	शुक्र	14/10/2088
शनि	06/10/2082	बुध	04/10/2083	केतु	04/08/2086	शुक्र	10/06/2087	सूर्य	08/11/2088

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
08/11/2088		06/11/2089		25/05/2092		31/08/2094		10/05/2097	
06/11/2089		25/05/2092		31/08/2094		10/05/2097		06/10/2097	
मंगल	30/11/2088	राहु	25/03/2090	गुरु	12/09/2092	शनि	03/02/2095	केतु	19/05/2097
राहु	23/01/2089	गुरु	28/07/2090	शनि	22/01/2093	बुध	22/06/2095	शुक्र	13/06/2097
गुरु	12/03/2089	शनि	22/12/2090	बुध	19/05/2093	केतु	18/08/2095	सूर्य	20/06/2097
शनि	09/05/2089	बुध	03/05/2091	केतु	06/07/2093	शुक्र	29/01/2096	चंद्र	03/07/2097
बुध	29/06/2089	केतु	26/06/2091	शुक्र	21/11/2093	सूर्य	18/03/2096	मंगल	11/07/2097
केतु	20/07/2089	शुक्र	29/11/2091	सूर्य	01/01/2094	चंद्र	08/06/2096	राहु	03/08/2097
शुक्र	18/09/2089	सूर्य	14/01/2092	चंद्र	11/03/2094	मंगल	05/08/2096	गुरु	22/08/2097
सूर्य	06/10/2089	चंद्र	01/04/2092	मंगल	29/04/2094	राहु	30/12/2096	शनि	15/09/2097
चंद्र	06/11/2089	मंगल	25/05/2092	राहु	31/08/2094	गुरु	10/05/2097	बुध	06/10/2097

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
06/10/2097		06/12/2098		13/04/2099		12/11/2099		10/04/2100	
06/12/2098		13/04/2099		12/11/2099		10/04/2100		29/04/2101	
शुक्र	16/12/2097	सूर्य	13/12/2098	चंद्र	01/05/2099	मंगल	21/11/2099	राहु	07/06/2100
सूर्य	07/01/2098	चंद्र	23/12/2098	मंगल	13/05/2099	राहु	13/12/2099	गुरु	28/07/2100
चंद्र	11/02/2098	मंगल	31/12/2098	राहु	14/06/2099	गुरु	02/01/2100	शनि	27/09/2100
मंगल	08/03/2098	राहु	19/01/2099	गुरु	13/07/2099	शनि	26/01/2100	बुध	20/11/2100
राहु	11/05/2098	गुरु	05/02/2099	शनि	15/08/2099	बुध	16/02/2100	केतु	12/12/2100
गुरु	07/07/2098	शनि	25/02/2099	बुध	15/09/2099	केतु	25/02/2100	शुक्र	14/02/2101
शनि	12/09/2098	बुध	15/03/2099	केतु	27/09/2099	शुक्र	22/03/2100	सूर्य	06/03/2101
बुध	12/11/2098	केतु	23/03/2099	शुक्र	02/11/2099	सूर्य	29/03/2100	चंद्र	07/04/2101
केतु	06/12/2098	शुक्र	13/04/2099	सूर्य	12/11/2099	चंद्र	10/04/2100	मंगल	29/04/2101

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - शुक्र - गुरु		चंद्र - शुक्र - शनि		चंद्र - शुक्र - बुध		चंद्र - शुक्र - केतु	
14/01/2019 09:58		05/04/2019 13:58		10/07/2019 23:13		05/10/2019 04:58	
05/04/2019 13:58		10/07/2019 23:13		05/10/2019 04:58		09/11/2019 17:13	
गुरु	25/01/2019 05:42	शनि	20/04/2019 20:13	बुध	23/07/2019 04:25	केतु	07/10/2019 06:40
शनि	07/02/2019 02:08	बुध	04/05/2019 11:56	केतु	28/07/2019 05:10	शुक्र	13/10/2019 04:43
बुध	18/02/2019 14:06	केतु	10/05/2019 02:52	शुक्र	11/08/2019 14:07	सूर्य	14/10/2019 23:20
केतु	23/02/2019 07:44	शुक्र	26/05/2019 04:25	सूर्य	15/08/2019 21:36	चंद्र	17/10/2019 22:21
शुक्र	08/03/2019 20:24	सूर्य	31/05/2019 00:05	चंद्र	23/08/2019 02:05	मंगल	20/10/2019 00:04
सूर्य	12/03/2019 21:48	चंद्र	08/06/2019 00:51	मंगल	28/08/2019 02:49	राहु	25/10/2019 07:54
चंद्र	19/03/2019 16:08	मंगल	13/06/2019 15:47	राहु	10/09/2019 01:17	गुरु	30/10/2019 01:32
मंगल	24/03/2019 09:46	राहु	28/06/2019 02:47	गुरु	21/09/2019 13:15	शनि	04/11/2019 16:28
राहु	05/04/2019 13:58	गुरु	10/07/2019 23:13	शनि	05/10/2019 04:58	बुध	09/11/2019 17:13

चंद्र - सूर्य - सूर्य		चंद्र - सूर्य - चंद्र		चंद्र - सूर्य - मंगल		चंद्र - सूर्य - राहु	
09/11/2019 17:13		18/11/2019 20:22		04/12/2019 01:37		14/12/2019 17:17	
18/11/2019 20:22		04/12/2019 01:37		14/12/2019 17:17		11/01/2020 02:44	
सूर्य	10/11/2019 04:10	चंद्र	20/11/2019 02:48	मंगल	04/12/2019 16:31	राहु	18/12/2019 19:54
चंद्र	10/11/2019 22:26	मंगल	21/11/2019 00:06	राहु	06/12/2019 06:52	गुरु	22/12/2019 11:34
मंगल	11/11/2019 11:13	राहु	23/11/2019 06:53	गुरु	07/12/2019 16:58	शनि	26/12/2019 19:39
राहु	12/11/2019 20:05	गुरु	25/11/2019 07:35	शनि	09/12/2019 09:27	बुध	30/12/2019 16:48
गुरु	14/11/2019 01:18	शनि	27/11/2019 17:25	बुध	10/12/2019 21:40	केतु	01/01/2020 07:09
शनि	15/11/2019 12:00	बुध	29/11/2019 21:10	केतु	11/12/2019 12:35	शुक्र	05/01/2020 20:43
बुध	16/11/2019 19:03	केतु	30/11/2019 18:28	शुक्र	13/12/2019 07:12	सूर्य	07/01/2020 05:36
केतु	17/11/2019 07:50	शुक्र	03/12/2019 07:21	सूर्य	13/12/2019 19:59	चंद्र	09/01/2020 12:23
शुक्र	18/11/2019 20:22	सूर्य	04/12/2019 01:37	चंद्र	14/12/2019 17:17	मंगल	11/01/2020 02:44

चंद्र - सूर्य - गुरु		चंद्र - सूर्य - शनि		चंद्र - सूर्य - बुध		चंद्र - सूर्य - केतु	
11/01/2020 02:44		04/02/2020 11:08		04/03/2020 09:07		30/03/2020 06:02	
04/02/2020 11:08		04/03/2020 09:07		30/03/2020 06:02		09/04/2020 21:43	
गुरु	14/01/2020 08:39	शनि	09/02/2020 01:01	बुध	08/03/2020 01:04	केतु	30/03/2020 20:57
शनि	18/01/2020 05:11	बुध	13/02/2020 03:20	केतु	09/03/2020 13:18	शुक्र	01/04/2020 15:34
बुध	21/01/2020 15:58	केतु	14/02/2020 19:48	शुक्र	13/03/2020 20:47	सूर्य	02/04/2020 04:21
केतु	23/01/2020 02:04	शुक्र	19/02/2020 15:28	सूर्य	15/03/2020 03:50	चंद्र	03/04/2020 01:39
शुक्र	27/01/2020 03:28	सूर्य	21/02/2020 02:10	चंद्र	17/03/2020 07:34	मंगल	03/04/2020 16:34
सूर्य	28/01/2020 08:41	चंद्र	23/02/2020 12:00	मंगल	18/03/2020 19:48	राहु	05/04/2020 06:55
चंद्र	30/01/2020 09:23	मंगल	25/02/2020 04:29	राहु	22/03/2020 16:56	गुरु	06/04/2020 17:00
मंगल	31/01/2020 19:28	राहु	29/02/2020 12:35	गुरु	26/03/2020 03:43	शनि	08/04/2020 09:29
राहु	04/02/2020 11:08	गुरु	04/03/2020 09:07	शनि	30/03/2020 06:02	बुध	09/04/2020 21:43

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

चंद्र - सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल - मंगल		मंगल - मंगल - राहु		मंगल - मंगल - गुरु	
09/04/2020 21:43		10/05/2020 08:13		19/05/2020 01:01		10/06/2020 09:56	
10/05/2020 08:13		19/05/2020 01:01		10/06/2020 09:56		30/06/2020 07:11	
शुक्र	14/04/2020 23:28	मंगल	10/05/2020 20:23	राहु	22/05/2020 09:33	गुरु	13/06/2020 01:34
सूर्य	16/04/2020 11:59	राहु	12/05/2020 03:43	गुरु	25/05/2020 09:08	शनि	16/06/2020 05:08
चंद्र	19/04/2020 00:52	गुरु	13/05/2020 07:33	शनि	28/05/2020 22:09	बुध	19/06/2020 00:44
मंगल	20/04/2020 19:28	शनि	14/05/2020 16:37	बुध	01/06/2020 02:13	केतु	20/06/2020 04:35
राहु	25/04/2020 09:03	बुध	15/05/2020 22:11	केतु	02/06/2020 09:32	शुक्र	23/06/2020 12:07
गुरु	29/04/2020 10:27	केतु	16/05/2020 10:22	शुक्र	06/06/2020 03:01	सूर्य	24/06/2020 11:59
शनि	04/05/2020 06:07	शुक्र	17/05/2020 21:10	सूर्य	07/06/2020 05:52	चंद्र	26/06/2020 03:45
बुध	08/05/2020 13:36	सूर्य	18/05/2020 07:37	चंद्र	09/06/2020 02:36	मंगल	27/06/2020 07:36
केतु	10/05/2020 08:13	चंद्र	19/05/2020 01:01	मंगल	10/06/2020 09:56	राहु	30/06/2020 07:11

मंगल - मंगल - शनि		मंगल - मंगल - बुध		मंगल - मंगल - केतु		मंगल - मंगल - शुक्र	
30/06/2020 07:11		23/07/2020 21:56		14/08/2020 01:01		22/08/2020 17:49	
23/07/2020 21:56		14/08/2020 01:01		22/08/2020 17:49		16/09/2020 14:24	
शनि	04/07/2020 00:55	बुध	26/07/2020 21:46	केतु	14/08/2020 13:12	शुक्र	26/08/2020 21:15
बुध	07/07/2020 09:13	केतु	28/07/2020 03:21	शुक्र	16/08/2020 00:00	सूर्य	28/08/2020 03:05
केतु	08/07/2020 18:16	शुक्र	31/07/2020 15:52	सूर्य	16/08/2020 10:27	चंद्र	30/08/2020 04:48
शुक्र	12/07/2020 16:44	सूर्य	01/08/2020 17:13	चंद्र	17/08/2020 03:51	मंगल	31/08/2020 15:36
सूर्य	13/07/2020 21:04	चंद्र	03/08/2020 11:29	मंगल	17/08/2020 16:01	राहु	04/09/2020 09:05
चंद्र	15/07/2020 20:18	मंगल	04/08/2020 17:03	राहु	18/08/2020 23:21	गुरु	07/09/2020 16:38
मंगल	17/07/2020 05:21	राहु	07/08/2020 21:07	गुरु	20/08/2020 03:11	शनि	11/09/2020 15:05
राहु	20/07/2020 18:22	गुरु	10/08/2020 16:44	शनि	21/08/2020 12:15	बुध	15/09/2020 03:36
गुरु	23/07/2020 21:56	शनि	14/08/2020 01:01	बुध	22/08/2020 17:49	केतु	16/09/2020 14:24

मंगल - मंगल - सूर्य		मंगल - मंगल - चंद्र		मंगल - राहु - राहु		मंगल - राहु - गुरु	
16/09/2020 14:24		24/09/2020 01:22		06/10/2020 11:40		03/12/2020 00:18	
24/09/2020 01:22		06/10/2020 11:40		03/12/2020 00:18		23/01/2021 03:33	
सूर्य	16/09/2020 23:21	चंद्र	25/09/2020 02:14	राहु	15/10/2020 02:45	गुरु	09/12/2020 19:56
चंद्र	17/09/2020 14:16	मंगल	25/09/2020 19:38	गुरु	22/10/2020 18:50	शनि	17/12/2020 22:15
मंगल	18/09/2020 00:42	राहु	27/09/2020 16:22	शनि	31/10/2020 21:27	बुध	25/12/2020 04:06
राहु	19/09/2020 03:33	गुरु	29/09/2020 08:09	बुध	09/11/2020 01:02	केतु	28/12/2020 03:42
गुरु	20/09/2020 03:25	शनि	01/10/2020 07:22	केतु	12/11/2020 09:34	शुक्र	05/01/2021 16:14
शनि	21/09/2020 07:45	बुध	03/10/2020 01:38	शुक्र	21/11/2020 23:41	सूर्य	08/01/2021 05:36
बुध	22/09/2020 09:06	केतु	03/10/2020 19:02	सूर्य	24/11/2020 20:43	चंद्र	12/01/2021 11:52
केतु	22/09/2020 19:33	शुक्र	05/10/2020 20:45	चंद्र	29/11/2020 15:46	मंगल	15/01/2021 11:27
शुक्र	24/09/2020 01:22	सूर्य	06/10/2020 11:40	मंगल	03/12/2020 00:18	राहु	23/01/2021 03:33

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 3 वर्ष 5 मास 6 दिन

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
13/08/1990		19/01/1994		19/01/2000		19/01/2007		19/01/2015	
19/01/1994		19/01/2000		19/01/2007		19/01/2015		19/01/2016	
	00/00/0000	उल्क	19/01/1995	सिद्ध	30/05/2001	संक	29/10/2008	मंग	29/01/2015
	13/08/1990	सिद्ध	20/03/1996	संक	19/12/2002	मंग	18/01/2009	पिंग	18/02/2015
सिद्ध	20/07/1991	संक	20/07/1997	मंग	28/02/2003	पिंग	30/06/2009	धांय	21/03/2015
संक	29/08/1992	मंग	19/09/1997	पिंग	20/07/2003	धांय	28/02/2010	भ्राम	30/04/2015
मंग	19/10/1992	पिंग	19/01/1998	धांय	18/02/2004	भ्राम	19/01/2011	भद्रि	20/06/2015
पिंग	28/01/1993	धांय	20/07/1998	भ्राम	29/11/2004	भद्रि	29/02/2012	उल्क	20/08/2015
धांय	30/06/1993	भ्राम	21/03/1999	भद्रि	19/11/2005	उल्क	30/06/2013	सिद्ध	30/10/2015
भ्राम	19/01/1994	भद्रि	19/01/2000	उल्क	19/01/2007	सिद्ध	19/01/2015	संक	19/01/2016

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
19/01/2016		19/01/2018		18/01/2021		18/01/2025		19/01/2030	
19/01/2018		18/01/2021		18/01/2025		19/01/2030		19/01/2036	
पिंग	29/02/2016	धांय	20/04/2018	भ्राम	30/06/2021	भद्रि	29/09/2025	उल्क	19/01/2031
धांय	29/04/2016	भ्राम	20/08/2018	भद्रि	19/01/2022	उल्क	30/07/2026	सिद्ध	20/03/2032
भ्राम	20/07/2016	भद्रि	19/01/2019	उल्क	19/09/2022	सिद्ध	20/07/2027	संक	20/07/2033
भद्रि	29/10/2016	उल्क	20/07/2019	सिद्ध	30/06/2023	संक	29/08/2028	मंग	19/09/2033
उल्क	28/02/2017	सिद्ध	18/02/2020	संक	20/05/2024	मंग	19/10/2028	पिंग	19/01/2034
सिद्ध	20/07/2017	संक	19/10/2020	मंग	29/06/2024	पिंग	28/01/2029	धांय	20/07/2034
संक	29/12/2017	मंग	18/11/2020	पिंग	19/09/2024	धांय	30/06/2029	भ्राम	21/03/2035
मंग	19/01/2018	पिंग	18/01/2021	धांय	18/01/2025	भ्राम	19/01/2030	भद्रि	19/01/2036

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
19/01/2036		19/01/2043		19/01/2051		19/01/2052		19/01/2054	
19/01/2043		19/01/2051		19/01/2052		19/01/2054		18/01/2057	
सिद्ध	30/05/2037	संक	29/10/2044	मंग	29/01/2051	पिंग	29/02/2052	धांय	20/04/2054
संक	19/12/2038	मंग	18/01/2045	पिंग	18/02/2051	धांय	29/04/2052	भ्राम	20/08/2054
मंग	28/02/2039	पिंग	30/06/2045	धांय	21/03/2051	भ्राम	20/07/2052	भद्रि	19/01/2055
पिंग	20/07/2039	धांय	28/02/2046	भ्राम	30/04/2051	भद्रि	29/10/2052	उल्क	20/07/2055
धांय	18/02/2040	भ्राम	19/01/2047	भद्रि	20/06/2051	उल्क	28/02/2053	सिद्ध	18/02/2056
भ्राम	29/11/2040	भद्रि	29/02/2048	उल्क	20/08/2051	सिद्ध	20/07/2053	संक	19/10/2056
भद्रि	19/11/2041	उल्क	30/06/2049	सिद्ध	30/10/2051	संक	29/12/2053	मंग	18/11/2056
उल्क	19/01/2043	सिद्ध	19/01/2051	संक	19/01/2052	मंग	19/01/2054	पिंग	18/01/2057

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
18/01/2057		18/01/2061		19/01/2066		19/01/2072		19/01/2079	
18/01/2061		19/01/2066		19/01/2072		19/01/2079		19/01/2087	
भ्राम	30/06/2057	भद्रि	29/09/2061	उल्क	19/01/2067	सिद्ध	30/05/2073	संक	29/10/2080
भद्रि	19/01/2058	उल्क	30/07/2062	सिद्ध	20/03/2068	संक	19/12/2074	मंग	18/01/2081
उल्क	19/09/2058	सिद्ध	20/07/2063	संक	20/07/2069	मंग	28/02/2075	पिंग	30/06/2081
सिद्ध	30/06/2059	संक	29/08/2064	मंग	19/09/2069	पिंग	20/07/2075	धांय	28/02/2082
संक	20/05/2060	मंग	19/10/2064	पिंग	19/01/2070	धांय	18/02/2076	भ्राम	19/01/2083
मंग	29/06/2060	पिंग	28/01/2065	धांय	20/07/2070	भ्राम	29/11/2076	भद्रि	29/02/2084
पिंग	19/09/2060	धांय	30/06/2065	भ्राम	21/03/2071	भद्रि	19/11/2077	उल्क	30/06/2085
धांय	18/01/2061	भ्राम	19/01/2066	भद्रि	19/01/2072	उल्क	19/01/2079	सिद्ध	19/01/2087

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
19/01/2087		19/01/2088		19/01/2090		18/01/2093		18/01/2097	
19/01/2088		19/01/2090		18/01/2093		18/01/2097		00/00/0000	
मंग	29/01/2087	पिंग	29/02/2088	धांय	20/04/2090	भ्राम	30/06/2093	भद्रि	29/09/2097
पिंग	18/02/2087	धांय	29/04/2088	भ्राम	20/08/2090	भद्रि	19/01/2094	उल्क	30/07/2098
धांय	21/03/2087	भ्राम	20/07/2088	भद्रि	19/01/2091	उल्क	19/09/2094	सिद्ध	13/08/2098
भ्राम	30/04/2087	भद्रि	29/10/2088	उल्क	20/07/2091	सिद्ध	30/06/2095		00/00/0000
भद्रि	20/06/2087	उल्क	28/02/2089	सिद्ध	18/02/2092	संक	20/05/2096		00/00/0000
उल्क	20/08/2087	सिद्ध	20/07/2089	संक	19/10/2092	मंग	29/06/2096		00/00/0000
सिद्ध	30/10/2087	संक	29/12/2089	मंग	18/11/2092	पिंग	19/09/2096		00/00/0000
संक	19/01/2088	मंग	19/01/2090	पिंग	18/01/2093	धांय	18/01/2097		00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 4, 6
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	91%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	86%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	73%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	72%	स्वास्थ्य, धन
हीरा	शुक्र	72%	स्वास्थ्य, धनार्जन, सुख
गोमेद	राहु	34%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग
पन्ना	बुध	9%	धन हानि, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	0%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना

रत्न की शुभता

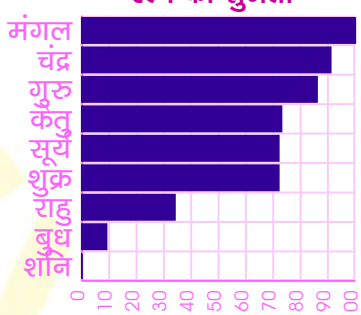

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	10/05/2004	59%	78%	100%	22%	86%	84%	0%	47%	80%
सूर्य	10/05/2010	84%	97%	100%	9%	92%	59%	0%	9%	61%
चंद्र	10/05/2020	78%	100%	100%	22%	86%	72%	0%	9%	61%
मंगल	11/05/2027	78%	97%	100%	0%	92%	72%	0%	9%	80%
राहु	10/05/2045	59%	78%	93%	9%	86%	78%	0%	55%	61%
गुरु	10/05/2061	78%	97%	100%	0%	98%	59%	0%	34%	73%
शनि	10/05/2080	59%	78%	93%	22%	86%	78%	0%	47%	61%
बुध	10/05/2097	78%	78%	100%	34%	86%	78%	0%	34%	73%
केतु	11/05/2104	59%	78%	100%	9%	86%	78%	0%	9%	86%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए मूंगा, मोती व पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पुखराज आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया, माणिक्य एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

पन्ना व नीलम रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से

विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। धन, यश, सुख और वाहनों का सुख प्रदान करेगा। मूंगा रत्न आपको महत्वाकांक्षी और दृढनिश्चयी व्यक्ति बनाएगा। मूंगा रत्न शुभता से बड़े पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न प्रभाव आपको इंजीनियरिंग क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति के अवसर दे सकता है। इसके अतिरिक्त यह मंगल आपको शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत पर ओर अधिक अनुकूल सिद्ध हो सकता है। आजीविका क्षेत्र में आपकी नेतृत्व योग्यता का विकास करने में भी मूंगा रत्न शुभ दायक रहेगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में मंगल पंचम भाव एवं दशम भाव के स्वामी तथा मंगल लग्नेश चंद्र के मित्र भी है। यह मंगल योगकारक ग्रह होने के कारण आपके लिए सबसे अधिक शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए अतिउत्तम रत्न है। संतान सुख और शैक्षिक जीवन में अनुकूल सफलता पाने के लिए आपको यह रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको संतान प्राप्ति के योग, पिता एवं आजीविका क्षेत्र से लाभ दिला सकता है। रत्न की शुभता से आपको भूमि, भवन, दैनिक व्यवसाय, परिश्रम से सम्मान प्राप्ति हो सकती है। मंगल रत्न मूंगा आपके ग्रहस्थ जीवन को भी सुखमय बनाए रख सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। आपके लिए चंद्र रत्न मोती धारण करना शुभ रहेगा। यह रत्न आपको समाज में प्रतिष्ठा देगा। यह रत्न आपको सफलता तो देगा

ही साथ ही लोगों की बीच आपकी लोकप्रियता भी बढ़ायेगा। मोती रत्न कार्यकुशलता में निखार लायेगा। जीवन में बड़ी सफलता देगा। रत्न शुभता से आप दयालु, निर्मल, लोकहित कारक एवं संतोषी व्यक्ति बनेंगे। व्यापार और व्यवसाय में सफलता देगा। आपको उच्चामहत्वांक्षी बनाकर उच्च पद प्रदान करेगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में चंद्र लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश चंद्र का रत्न मोती धारण कर आप अपने जीवन को दीर्घकालिन बना सकते है। मोती रत्न आपके स्वास्थ्य को अनुकूल, तेज एवं स्फूर्ति दे सकता है। मोती रत्न की शुभता से आप को प्रयासों में सफलता, यश-सम्मान एवं भावुकता में कमी कर सकता है। रत्न शुभता से आप व्यवहारिक बनेंगे तथा आपका मनोबल उच्च रहेगा। मोती रत्न आपको यशस्वी बनाकर व्यवसाय में सफलता दे सकता है। इसके साथ ही रत्न की शुभता आपके दांपत्य जीवन को सुखी रख सकती है। आपके स्वभाव की अस्थिरता को नियंत्रित करने में भी मोती रत्न अहम भूमिका निभा सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने से आपकी विद्वता, ज्ञान अर्जन योग्यता, विनम्रता भाव का विकास होगा। पुखराज रत्न आपके लिए जीवन रत्न है। शुभ कार्य निर्विघ्न पूर्ण होंगे। लग्नस्थ गुरु पंचम, सप्तम एवं नवम भाव को देखता है। अतः यह पुखराज रत्न संतान सुख को प्रबल करेगा। धार्मिक कार्यों में अभिरूचि देगा। पुखराज रत्न आपके लिए सुख, धन व यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न आपके वैवाहिक जीवन को स्थिरता देगा। संतान स्वास्थ्य वृद्धि कर संतान सुख को बढ़ाएगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में गुरु षष्ठ भाव एवं नवम भाव के स्वामी है। गुरु लग्नेश चंद्र के मित्र एवं त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए शुभ ग्रह होते है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न धारण कर आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली बन सकता है। आप विद्या, बुद्धि व संतान से युक्त हो सकते है। आपके कार्यों में जो बाधाएं आती है वो रत्न शुभता से दूर हो सकती है। छठे भाव

का रत्न होने के कारण यह रत्न रोग, शत्रु तथा ऋणों पर नियन्त्रण बनाये रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। शत्रुओं पर विजय, भाग्य व धर्म को प्रबलता मिल सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको केतु रत्न लहसूनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आप परिश्रमी और कर्मठ बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपकी मेहनत एवं लगन योग्यता को बढ़ायेगा। लग्न भाव में बैठकर केतु सप्तम भाव से संबंध बना रहे है इसके प्रभाव से केतु रत्न लहसुनिया आपके ग्रहस्थ जीवन को सुख-सौहार्द पूर्ण बनायेंगा। लहसुनिया रत्न आपके साहस भाव में बढ़ोतरी करेगा।

केतु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र दशम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यो में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य प्रथम भाव में स्थित हैं। अतः आपको शुक्र रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न धारण करने से आपको उत्तम मित्र व उच्च पद की प्राप्ति होगी। सरकार से आपके अच्छ संबंध होंगे। सत्ता से जुड़े लोगों से आपके संबंध करीबी और मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आत्मविश्वास भाव में वृद्धि करेगा। तथा इसके प्रभाव से आपकी व्यक्तित्व में भी तेज आयेगा। आपके व्यक्तित्व का विकास होगा। आपका चहुंमुखी विकास होगा। धन-धान्य बढ़ेगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव के स्वामी है। सूर्य लग्नेश चंद्र का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते है। सूर्य रत्न की शुभता से आपको धन व कुटुम्ब एवं मान-सम्मान प्राप्त करा सकता है। माणिक्य के प्रभाव से आयु व दैनिक जीवन में सुख-शांति प्राप्त की जा सकती है। यह रत्न बातचीत में राजसिक प्रभाव, वाणी में आत्मविश्वास भाव दे सकता है। तथा यह रत्न आपको बैंक, रेवेन्यी, अकाउन्ट, सात्विक भोजन, कीमती धातु जैसे विषयों में शुभता दे सकता है। माणिक्य रत्न को धारण पर आप छोटे भाई- बहनों की विदेश यात्रा, कर्जा चुकाना, जेल, सजा, माता को होने वाले लाभ, मामा की यात्राएं, उच्च शिक्षा, दुर्घटना, ऋण इत्यादि में शुभता प्राप्त कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र लग्न भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। यह रत्न प्रेम, आकर्षण एवं विपरीत लिंग विषयों में सफलता देगा। हीरा रत्न से धन संचय करना आपके लिए सहज होगा। शुक्र लग्न भाव से सप्तम भाव को प्रभावित कर रहे है। इसलिए शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप वैवाहिक जीवन को अनुकूल बनाये रख सकते है। यह हीरा रत्न पारिवारिक सुख-समृद्धि, स्वतंत्र व्यापार में लाभदायक सिद्ध होगा। नियमानुसार धारण किया गया हीरा आपको सुख, ऐश्वर्य, सम्मान, वैभव, विलासिता आदि दे सकता है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं आयेश है। शुक्र ग्रह की शुभता प्राप्त करने के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। हीरे की शुभता आपको घर, जमीन-जायदाद, वाहन, प्रतिष्ठा और माता के सुख प्राप्त हो सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। आय, उन्नति, सफलता के अतिरिक्त यह रत्न आपको बडी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी, दोस्त एवं उत्तम शुभ चिन्तक दे सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद पहनने पर आपको अपना व्यापार करने पर हानि की स्थिति बन सकती है। इस रत्न को धारण करने पर आपको अपने कार्यो के अनुकूल सराहना प्राप्त नहीं हो पाएगी। यह रत्न आपको स्वभाव से क्रोधी और अहंकारी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप अपनी सफलता से असंतुष्ट हो सकते है। आपका स्वभाव कुछ हद तक उग्र हो सकता है। रत्न की शुभता आपके साथ न होने के कारण आपकी संगति और संबंध अयोग्य व्यक्तियों के साथ हो सकती है। दुष्ट व्यक्तियों के द्वारा आपको धन हानि की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी धार्मिक आस्था में कमी कर सकता है।

राहु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि छठे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वितीय भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न मोती धारण करने से आपको शिक्षा, बुद्धि विकास, वक्तव्य और शास्त्रीय शोध विषयों में दिक्कतें आ सकती है। सांपत्तिक स्थिति में हानि हो सकती है। रत्न प्रतिकूलता से शेयर बाजार में आपका हानि से सामना हो सकता है। रत्न प्रभाव से बैंक कार्य आपकी परेशानी की वजह बन सकते है। बैंक कारोबार में हानि हो सकती है। सरकारी वसूली और टैक्स इत्यादि आपको सरकारी दंड दे सकते है। आपकी वाणी में कडवाहट, शिक्षा में व्यवधान एवं चिड़चिड़ेपन की स्थिति बन सकती है। रत्न पहनने पर शत्रु आपकी परेशानी बढ़ा सकते है। गलत परामर्श के कारण जोखिम भरा निर्णय लेने से आपको हानि हो सकती है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में बुध तीसरे भाव एवं द्वादश भाव के स्वामी है। बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको बंधु बांधवों का सुख कम प्राप्त हो सकता है। पराक्रम भाव के पक्ष से भी यह रत्न आपके लिए अनुकूल फलदायक नहीं रहेगा। भाई-बहनों से संबंधों की मधुरता में कमी हो सकती है। बौद्धिक बल से धनार्जन करने में पन्ना रत्न आपको सहयोग नहीं करेगा। व्यावसायिक यात्राओं में असफलता का सामना आपको करना पड़ सकता है। पन्ना रत्न आपके भाग्योदय में बाधक का कार्य कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यय व्यर्थ हो सकते है। व्ययों को नियंत्रित रखने में आपको कष्ट हो सकते है। विद्या और बौद्धिक विषयों में आपके साथ परेशानियां बनी रहेंगी।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम पहनने से आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। यह रत्न आपकी पाचनशक्ति को कमजोर कर सकता है। आपकी कम भूःख की परेशानी हो सकती है। यह रत्न आपको शत्रुओं से भयभीत रख सकता है। आप प्रतिवादियों से भय खा सकते है। बंधु-बांधवों का सुख आपको समय पर न मिल पाए। रत्न प्रभाव आपमें अहंकार भाव ला सकता है। यश, संपत्ति के अधिकारों में कमी हो सकती है। विषय वासनाओं में आप अधिक रत हो सकते है। गुणीजनों का अनजाने में आपके द्वारा अनादर हो सकता है। नीलम रत्न धारण से आपके ऋण भुगतान मानसिक चिंता का कारण बन सकते है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शनि सप्तमेश एवं अष्टमेश है। शनि का रत्न नीलम धारण करना आपके लिए सुख फलदायक नहीं रहेगा। नीलम रत्न आपके भाग्योदय में रुकावट ला सकता है। संतान, जीवन साथी व माता के कष्ट रत्न प्रभाव से बढ़ सकते है। यह रत्न आपको पेशाब से संबंधित रोग दे सकता है। शत्रु आपको शारीरिक कष्ट दे सकते है। रत्न प्रभाव से आपका मन चंचल रहेगा। मित्रों से मित्रताएं बनती बिगड़ती रहेंगी। यह रत्न आपकी आयु में कमी का कारण बन सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य कमजोर होगा। गुप्त रोग भी रत्न प्रभाव से प्रभावी हो सकते है। यह रत्न आपकी शारीरिक अस्वस्थता को बढ़ाएगा। कलह और अपयश की स्थिति आपके लिए यह रत्न बना सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

चन्द्र
(10/05/2010 - 10/05/2020)

चन्द्र की दशा में आपका मोती, मूंगा, पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, गोमेद व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(10/05/2020 - 11/05/2027)

मंगल की दशा में आपका मूंगा, मोती, पुखराज, लहसुनिया व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(11/05/2027 - 10/05/2045)

राहु की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, मोती व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(10/05/2045 - 10/05/2061)

गुरु की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, मोती व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(10/05/2061 - 10/05/2080)

शनि की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, मोती व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(10/05/2080 - 10/05/2097)

बुध की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, माणिक्य, मोती व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(10/05/2097 - 11/05/2104)

केतु की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, लहसुनिया, मोती व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, गोमेद व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - मोती

आपका जन्म कर्क राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी चंद्रमा होता है। चंद्रमा सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कर्क राशि के लग्न वाले जातकों को कर्क राशि के स्वामी ग्रह चंद्रमा को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। चंद्र ग्रह के लिये मोती रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी चंद्र मंत्री पद व जनता का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को माता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। चंद्रमा ग्रह मन एवं माता का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको मानसिक रोग या ठंड से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा डिप्रेशन की स्थिति में डिप्रेशन से मुक्ति दिलाता है।

मोती रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है तथा चंद्र ग्रह बुध को अपना मित्र ग्रह मानता है। मोती रत्न चंद्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात सोमवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल चंद्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। सोमवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय चंद्र की होरा का होता है। मोती को यदि सोमवार के साथ-साथ चंद्र के नक्षत्र अर्थात् रोहिणी, हस्त और श्रवण में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

मोती को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, चंद्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चंद्र का मंत्र - ऊँ सों सोमाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि चंद्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चीनी, दही, सवा मीटर सफेद कपड़े का दान करें तो मोती रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन चंद्र का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या शिवलिंग पर जल चढ़ायें और शिव आराधना करें तो यह मोती रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक सोमवार को शिव चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

कर्क लग्न वाले जातक यदि मोती रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

RATNA JYOTI

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कर्क लग्न की हैं। कर्क लग्न आपको संवेदनशील बना रहा है। चर लग्न आपको लगातार कार्य करने का स्वभाव दे रहा हैं। आपको जलीय स्थानों के नजदीकरहना अधिक प्रिय हो सकता हैं। लगातार कार्य करना आपका स्वभाव , बिना थके निरन्तर कार्य करना आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालता है। आप भावुक, धैर्यवान है,और कठिन से कठिन समय में भी घबराते नहीं हैं। कुछ विषयों पर आप जिद्धी भी हो जाते हैं। अपने स्वभाव के नकारात्मक पक्ष को छोड़ने का प्रयास आपको करना चाहिए। साथ ही आपको अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करना चाहिए। कार्य के घण्टो में से थोडा समय आराम के लिए भी निकालें। आप अत्यधिक भावनात्मक हैं इसलिए आपके निर्णय कई बार गलत भी हो जाते हैं।

फिर भी आप जब किसी काम को करने की ठान लेते है, तो उसे करके ही बैठते हैं।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। तथा इन भावों के स्वामियों को त्रिक भावेश के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भाव, भावेश व इन भावों में बैठे ग्रह स्वयं में किसीन किसी प्रकार की अशुभता लिये होते हैं। यहीं कारण है की ये सभी आपके जीवन में कष्ट और बाधाओं का कारण बन सकते है। जिसमें छठा भाव रोग, ऋण और शत्रुओं सेकष्ट देता है, इसका स्वामी जिस भाव में जाता है, उसके शुभ फलों में कुछ न कुछ कमी अवश्य करता हैं। जिसके फलस्वरूप आपको षष्ट भाव के स्वामी या इस भाव में स्थितग्रहों की महादशा-अन्तर्दशाओं में भाव सम्बंधित रोग, ऋण या शत्रुओं के द्वारा शारीरिक या मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं।

6, 8 व 12 भावों में अष्टम भाव विशेष अशुभता लिए होते हैं। इस भाव का स्वामी अष्टमेश, जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता हैं। अष्टम भाव अशुभता, बाधा और पाप का भाव हैं। और इस भाव या इस भाव के स्वामी से किसी भी भावेश का सम्बन्ध होना, भावेश की शुभता में कमी कर अशुभता को बढाता है। तीसरा और अंतिम त्रिक भाव, द्वादश भाव है जिसे व्यय भाव भी कहा जाता हैं। द्वादश भाव से हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष का विचार किया जाता हैं। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव के विषयों में अशुभता लाते हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न में षष्ठ भाव व नवम भाव के स्वामी गुरु हैं। षष्टेश गुरु आपका मामा-मौसी से बैर करा सकता हैं। संतान सुख में कमी कर सकता है तथा संतान रोगों के प्रभाव में शीघ्र आ सकती हैं, बुद्धि और विवेक का समय पर उपयोग नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त ऋण आदि विषयों में शत्रु बाधक हो सकते हैं।

सप्तम व अष्ठम भाव के शनि की यह स्थिति जीवन साथी से प्राप्त होने वाले सुखों में कमी, सरकारी क्षेत्रों व आजीविका क्षेत्रों से अल्प लाभ, धन संचय कठिन, कुटुंबका न्यून सुख, विद्या बुद्धि से अल्प लाभ व संतान सुख में बाधक बनता हैं।

द्वादश व तृतीय भाव के स्वामी बुध हैं। बुध आपके लग्न के लिए अशुभ ग्रहों की श्रेणी में आते हैं। बुध की यह स्थिति आपको अधिक व्ययों से परेशान, पारिवारिक सुख में न्यूनता, धन संचय दुष्कर, शत्रु संघर्ष से हानि के योग बना सकता हैं।

आपकी कुंडली में शनि सौतेली माता से कष्ट, संपतिनाश, अल्पभाषी, एकांतप्रिय, शारीरिक कष्ट का कारक बन सकता हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा

मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

RATNA JYOTI

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	व्यावसायिक परेशानी
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	सन्तति कष्ट

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रमा के साथ जन्म कुंडली में स्थित है। अतः आप चन्द्र कुण्डली से मांगलिक हैं। परन्तु मंगल का योग चन्द्रमा से होने पर आपका मांगलिक दोष समाप्त हो जाता है। ऐसा मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप मानसिक तथा शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे। परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न होता रहेगा। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब होगा परन्तु विवाह अत्यन्त ही सुखद एवं शान्त वातावरण में सम्पन्न होगा। किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य सुख का उपभोग कर सकेंगे।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आप एक स्वस्थ पुरुष होंगे तथा मानसिक रूप से भी कभी विचलित नहीं रहेंगे। चन्द्रमा से चतुर्थ भाव पर मंगल की दृष्टि होने से सुख संसाधनों से आप सर्वदा युक्त रहेंगे। जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप चल या अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को भी प्राप्त कर सकेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे स्वभाव से क्रोध के भाव को प्रदर्शित करेंगी। इससे दाम्पत्य जीवन पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि से शारीरिक कुशलता बनी रहेगी तथा अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी यथा समय सिद्ध होते रहेंगे जिससे आप मानसिक रूप से शान्ति प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत होगा।

अपने दापम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली में मांगलिक दोष उचित

नियमानुसार भंग हो रहा हो। यदि आप इस प्रकार से अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो आप अत्यन्त ही भाग्यशाली पुरुष सिद्ध होंगे। आप भौतिक सुख संसाधनों से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करेंगे। साथ ही समाज में भी आप पूर्ण मान प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे। आपकी पत्नी भी एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा आपके परस्पर संबंध भी हमेशा मधुर रहेंगे एवं अनावश्यक तनाव तथा कटुता से आप मुक्त ही रहेंगे।

इसके अतिरिक्त कुंडली मिलान के समय समान भाव में मंगल की यदि आवश्यक न हो तो उपेक्षा ही करें क्योंकि समान भावों में मंगल के रहने से दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक बाधाएं तथा समस्याएं उत्पन्न होती हैं जिससे यदा कदा आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होता है। अन्य भावों में स्थित मंगल शुभ रहेगा एवं दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सोच समझ कर इस विषय में अन्तिम निर्णय लेना चाहिए।

RATNA JYOTI

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

RATNA JYOTI

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 13 है। एक एवं तीन का योग 4 होने से आपका मूलांक चार होता है। अंक एक का स्वामी सूर्य, तीन का स्वामी गुरु तथा मूलांक 4 का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु तथा पाश्चात्य मतानुसार हर्षल होता है। इन तीनों ग्रहों के गुण अवगुण आपके जीवन को प्रभावित करेंगे। सूर्य प्रभाव से आप अपने लक्ष्य को वेधने में सफल होंगे एवं जीवन में काफी ऊँचाईयाँ प्राप्त करेंगे। गुरु प्रभाववश आपके अन्दर बुद्धि चातुर्य अच्छा रहेगा। आप अपनी बुद्धि से समाज में ख्याति अर्जित करेंगे तथा नाम भी प्राप्त करेंगे । हर्षल या राहु के प्रभाव द्वारा आपमें अच्छा साहस रहेगा, लेकिन जब कभी आप दुःसाहस करेंगे या दिखायेंगे तब आपको लाभ के साथ हानि की भी उपलब्धि होगी।

हर्षल ग्रह परिवर्तन का द्योतक है। अचानक सफलता, असफलता देता है। कभी-कभी यह ग्रह विस्फोटक स्थिति भी निर्मित करता है। अतः ऐसे कार्यों को जिनमें जोखिम या हानि की संभावना हो, उन्हें आपको सोच समझकर करना लाभप्रद रहेगा। वैसे सूर्य-गुरु के योग से साहस एवं धैर्य आपमें अच्छा रहेगा एवं जीवन में कई अवसरों पर आप अपने साहस एवं धैर्य का परिचय देंगे। आपकी शीघ्रातिशीघ्र कार्य संपादन करने की अभिलाषा रहेगी। कार्यों में रुकावट को आप बर्दास्त नहीं करेंगे और आपके सतत् प्रयत्न कार्य की सफलता में ही लगे रहेंगे।

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के हिमायती होंगे एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़े दूर तथा आधुनिक होंगे।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रूझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगे। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

आपका मूलांक 4 है एवं भाग्यांक भी 4 है। मूलांक 4 एवं भाग्यांक 4 का स्वामी हर्षल ग्रह को माना गया है। मूलांक तथा भाग्यांक एक ही होने से आपके अंदर इनके प्रभाव द्विगुणित मात्रा में आएंगे। आपका व्यापार-रोजगार परिवर्तनशील रहेगा एवं अपनी मेहनत तथा संघर्ष के द्वारा आप अपना भाग्य बनाएंगे। जीवन में आपको अचानक सफलताएं प्राप्त होंगी। एकाध बार कटु असफलता का सामना भी करना पड़ेगा। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में परिवर्तन करते रहना आपकी नियति में शामिल रहेगा। आप रूढ़िवादिता से थोड़ा हट कर कार्य

करेंगे तथा ऐसे ही कार्यों को आप पसंद करेंगे जिसमें परिवर्तन आम बात हो। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपकी यात्राएं निरंतर चलती रहेंगी, हालांकि यात्राओं से आपको धन की प्राप्ति होगी। एकाध यात्रा तो आपको अधिक मात्रा में धन-संपत्ति इत्यादि देगी तथा एकाध यात्राओं में दुर्घटना की संभावना भी रहेगी। अतः सोच-समझ कर कार्य करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। आपकी सामाजिक स्थिति मध्यम श्रेणी की रहेगी एवं समाज में आप थोड़ा बहुत लोकप्रिय भी रहेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में आपकी लोकप्रियता उच्च कोटि की रहेगी।

आपका भाग्योदय 22 वर्ष से प्रारंभ होगा। 31 वें वर्ष पर उन्नति प्राप्त होगी तथा 40 वें वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 4 की 1 एवं 8 से मित्रता है तथा भाग्यांक 4 की 1 एवं 8 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 1, 4, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनमें आपके जीवन की कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपका मूलांक-भाग्यांक एक ही होने से मूलांक-भाग्यांक के फलों में द्विगुणित वृद्धि होगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, अप्रैल, अगस्त माह विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे। आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 4 एवं भाग्यांक 4 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 4, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19 28, 37, 46, 55, 64, 73
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनशील रहेंगे। इन वर्षों में कुछ ऐसी घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।

ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरू, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी

अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संही, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मी, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एव दाँत रोगी होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शान्त स्वभाव एवं दृढ़तापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करने वाले होते हैं। इनकी प्रवृति भावुक होती है तथा प्रेम एवं स्नेह का निश्छल भाव विद्यमान रहता है। जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते हैं तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। ये धार्मिक प्रवृति के भी व्यक्ति होते हैं तथा समाज एवं देश सेवा के कार्य में तत्पर रहते हैं। अन्य जनों की मनोइच्छा को जानने में ये दक्ष होते है। साथ ही राजनीति या सरकारी क्षेत्रों में उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में इनको सफलता प्राप्त होती है जिससे समाज में ये प्रतिष्ठित तथा यशस्वी होते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वरूप सुदंर, दर्शनीय एवं आकर्षक होगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा अपने विषय पर आपका आधिपत्य रहेगा। साथ ही बुद्धि भी तीक्ष्ण होगी तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमतापूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको वांछित सफलता भी प्राप्त होगी। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा।

यद्यपि यदा कदा आपको जीवन में उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा परन्तु अपने साहस पराक्रम एवं बुद्धि से आप इनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ होंगे। साथ ही स्वपरिश्रम से भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

लग्न में शुक्र की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपके व्यक्तित्व से सभी लोग प्रभावित होंगे एवं यथोचित मात्रा में आपको मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके सभी कार्य उत्साह एवं परिश्रम से सम्पन्न होंगे तथा इनमें आपको अवसरानुकूल सफलता भी प्राप्त होगी। आप श्रेष्ठ कार्यों को करने में रूचिशील रहेंगे तथा इन कार्यों से आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पिता के प्रति आपका आत्मिक लगाव रहेगा तथा उनकी सेवा करने में तत्पर होंगे। पिता के नाम से आपको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। परिवार में आप श्रेष्ठ रहेंगे तथा परिवार का गौरव बढ़ाने में समर्थ होंगे। कर्तव्यपरायण का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा तथा ईमानदारी से अपने कार्यों को सम्पन्न करके समाज या कार्य क्षेत्र में उन्नति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त कृतज्ञता का भाव भी रहेगा एवं अन्य जनों के उपकार के लिए उनका अवश्य आभार प्रकट करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। संगीत एवं कला के प्रति आपकी रूचि होगी तथा यत्नपूर्वक उनका ज्ञान अर्जित करके इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। मित्रों के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित मात्रा में सहयोग प्राप्त होगा।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में सिंह राशि उदित हुई है तथा सूर्य इस राशि का स्वामी है। अतः इसके प्रभाव से आप अधिक बोलना पसन्द नहीं करेंगे तथा अधिकाशं समय शान्त रहना ही आपको रूचिकर लगेगा तथा अवसरानुकूल ही वार्तालाप करना पंसद करेंगे। वैभवशाली वस्तुओं की प्राप्ति तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को सम्पन्न करने में आप सर्वदा उत्सुक तथा तत्पर रहेंगे। आप कभी कभी शीघ्र ही क्रोधित भी होंगे लेकिन शीघ्र ही शांत भी हो जाएंगे। पारिवारिक शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे तथा यत्नपूर्वक पारिवारिक जनों को पूर्ण सुविधाएं प्रदान करेंगे। पैतृक सम्पति की आपको अवश्य प्राप्ति होगी। साथ ही बहुमूल्य वस्तुओं से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे।

जीवन में आपको जमीन जायदाद संबंधी लाभ होगा तथा गृह एवं वाहन आदि के स्वामित्व को भी प्राप्त करेंगे। सामाजिक जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने के लिए आप मधुर वाणी का प्रयोग करेंगे। साथ ही आपके स्पष्ट तर्को से सभी लोग आपसे सहमत रहेंगे। परिवार की सुख शान्ति पर आप प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिवार में धार्मिक कार्यक्रम या उत्सव समय समय पर होते रहेंगे। परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का पालन पोषण करने में भी आप समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप एक जागरूक, धार्मिक तथा परोपकारी प्रवृति से युक्त होकर समाज में मान सम्मान अर्जित करके अपना समय व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कन्याराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति तीव्र रहेगी। साथ ही आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दार्शनिक या बौद्धिक कार्यो को करने में प्रवृत रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि के लिए उनकी गलतियों को भूल जाने की सीमा तक क्षमा करने में समर्थ रहेंगे परन्तु आयु के साथ.साथ आपसी संबंधों में तनाव भी हो सकता है। आप अपने क्षेत्र में नेतृत्व प्राप्त करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा यथायोग्य आदर प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक अच्छे वक्ता होंगे तथा भाषा पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा।

संचार की सुख सुविधाओं यथा वाहन, दूरभाष तथा दूरदर्शन आदि उपकरणों से सम्पन्न रहेंगे। आप संगीत के प्रिय होंगे एवं कला के प्रति भी आपकी रूचिशीलता रहेगी। आपका कंठ मधुर रहेगा जिससे अन्य जनों को अपने गायन से आकर्षित कर सकते हैं लेकिन सर्वप्रथम आप अपने सांसारिक कार्यो को पूर्ण करेंगे उसके बाद ही संगीत आदि कार्यो को सम्पन्न करेंगे। आप समय समय पर यात्राएं करेंगे तथा इनसे आपको भविष्य में इच्छित लाभ होगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। आपकी पड़ोसी देशों की यात्राएं भी हो सकती हैं। इसके साथ ही पड़ोसियों से भी आप अच्छे संबंध रखना पसन्द करेंगे। नीति के आप ज्ञाता होंगे अतः आम चुनाव लेख लिखने या पुस्तक आदि प्रकाशन से भी आप ख्याति तथा लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप शस्त्र विद्या के ज्ञाता, अच्छे शील स्वभाव तथा मित्रों से युक्त, सामाजिक तथा धार्मिक वृति के पुरूष होंगे ।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में सर्व सुखों से आप युक्त होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में अपना अनुकूल स्तर बनाएं रखेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको माता के द्वारा विशिष्ट सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा इससे आपके वैभव एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी। विवाह के बाद पत्नी के सहयोग एवं प्रभाव से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आपको जीवन में उत्तम एवं विस्तृत क्षेत्र में स्थित गृह भी प्राप्ति होगी तथा सुख पूर्वक इसमें निवास करेंगे। आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में व्यक्तिगत रूप से तत्पर होंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त आपको उत्तमवाहन की भी प्राप्ति होगी जिसका आप आनंद पूर्वक उपभोग करने में समर्थ होंगे।

आपकी माता जी शिक्षित बुद्धिमान एवं तेजस्वी महिला होगी तथा पारिवारिक जनों पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा एवं सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा वं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

विद्या अध्ययन के क्षेत्र में आप परिश्रमी होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने में सफल होंगे। प्रारंभिक कक्षाओं से ही आप अच्छे अंक अर्जित करेंगे तथा स्नातक परीक्षा काफी अच्छे अंकों से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य को उज्ज्वल बनाने में समर्थ होंगे। आप व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ हो सकते है क्योंकि आपमें परिश्रम तथा बुद्धिमता दोनों भाव विद्यमान है। इसके अतिरिक्त मित्र संबंधी एवं अन्य लोग भी आपकी सफलता से प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे परन्तु बुद्धि में तीक्ष्णता के भाव की न्यूनता होगी जिससे समस्याओं के समाधान में किंचित विलम्ब हो सकता है। अतः आपको सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए तथा शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। नीचस्थ चन्द्र के प्रभाव से वैदिक एवं धर्मशास्त्रों में आपकी रूचि अल्प मात्रा में होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान एवं भौतिक शास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी एवं इस क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम से वांछित ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप कोई शोध कार्य भी आप सम्पन्न कर सकते हैं। इससे आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग एक विद्वान के रूप में आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे।

पंचमभाव में वृश्चिक राशि के प्रभाव से प्रेम प्रसंगो में आप की काफी रूचि होगी तथा मनोरंजन एवं दिल बहलाने का आप इसे साधन समझेंगे। इसमें मर्यादा एवं आदर्श की भावना भी कम ही होगी जिससे आपको समय समय पर अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त ही भावात्मक लगाव की अपेक्षा शारीरिक लगाव अधिक होगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

जीवन में आपको संतति प्राप्ति में आपको विलम्ब होगा तथा कन्या सन्तति अधिक होगी। आपकी सन्तति बुद्धिमान, योग्य एवं तेजस्वी प्रवृति के होंगे तथा अपने इन गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे लेकिन माता-पिता की आज्ञा का पालन वे अल्प मात्रा में ही करेंगे तथा अपनी मर्जी के कार्य ही अधिक करेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में माता-पिता की सलाह कम ही लेंगे आपकी सेवा में व्यावहारिक बुद्धि के होंगे अतः आपको उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देने चाहिए तथा उन पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं डालना चालिए। इससे आपके सम्बन्धों में अनुकूलता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त बच्चों से आपको विशेष अपेक्षा नहीं करनी चाहिए तथा वृद्धावस्था के लिए अपने लिए यथोचित मात्रा में धन संचित करके रखना चाहिए।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी सन्तति काफी परिश्रम एवं पराक्रम से ही सन्तोषजनक उन्नति करने में समर्थ होगी। यद्यपि आप उनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करेंगे लेकिन वे इसका पूर्ण लाभ उठाने में समर्थ होंगे परन्तु वे व्यावहारिक प्रवृति के होंगे तथा अपनी चतुराई से आजीविका अर्जन में समर्थ रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त तेजस्वी प्रवृति होने के कारण यदा-कदा अन्य सामाजिक जनों से उनका विवाद भी हो सकता है लेकिन सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक विद्वान तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा शत्रुता के भाव की हमेशा उपेक्षा करेंगे। यद्यपि आप शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहते है परन्तु आपके शत्रु इसमें बाधाएं उत्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही वे आपके सम्मान को हानि तथा सामाजिक स्तर पर उपेक्षा करेंगे। इसे रोकने के लिए आप समयानुसार कोर्ट या मुकद्दमे आदि का सहारा ले सकते है। इस प्रकार आप दृढ़ता तथा बहादुरी से शत्रुपक्ष का सामना करेंगे तथा उनको पराजित करने में समर्थ रहेंगे। इस कार्य में आपकी बुद्धिमता तथा आपके सद्मित्रों का मंडल भी आपको सहयोग प्रदान करेगा। यदा कदा पारिवारिक या बन्धुवर्ग से भी आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्ततोगत्वा इसमें आपको सफलता प्राप्त होगी। आप उच्च नैतिकता का अनुपालन करेंगे अतः शत्रुपक्ष को पराजित करने के लिए नकारात्मक साधनों का कभी भी प्रयोग नहीं करेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति बनाने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में सक्रियता से कार्यरत होकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाएंगे।

आपका सेवक वर्ग भी आज्ञाकारी होगा तथा आपको पूर्ण सम्मान प्रदान करेगा। अपने सेवकों तथा सहायकों के प्रति आपका दृष्टिकोण सकारात्मक तथा अपनत्व का रहेगा इससे आपकी महानता में वृद्धि होगी। जीवन में ऐसे अवसर बहुत कम आएंगे जब आपको ऋण की आवश्यकता पड़ेगी यदि आ भी गई तो आप ऋण से शीघ्र ही मुक्त हो जाएंगे। आपको अपने मामा मामियों से अच्छे संबंध रखने चाहिए क्योंकि इनसे जीवन में आपको पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा लेकिन मामियों के स्वभाव में भिन्नता के कारण यदा कदा इसमें न्यूनता रहेगी तथा वे आपको कम ही सहयोग प्रदान करेंगी।

यदा कदा आपको मुकद्दमे आदि का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्त में इसमें विजय प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आप समाज में एक माननीय पुरूष होंगे तथा अपने अच्छे संबंधों से आपको सभी लोगों से यथोचित सहयोग एवं सम्मान मिलता रहेगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा राहु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया सप्तम भाव में मकर राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी चंचल वात प्रकृति तथा धनवान होता है। राहु के प्रभाव से वह तेजस्वी पराक्रमी एवं साहसी भी होता है एवं आधुनिकता के प्रति भी उसके मन में आकर्षण रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा चंचलता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। सांसारिक कार्य कलापों को करने में वह चतुर होंगी तथा उनसे सभी लोग प्रभावित होंगे। आधुनिकता के प्रति भी उनका आकर्षण रहेगा एवं पाश्चत्य साहित्य एवं सस्कृति का अनुपालन करने के लिए प्रवृत होंगी। राहु के प्रभाव से कर्तव्य परायणता के भाव की उनमें न्यूनता रहेगी।

आपकी पत्नी किंचित श्याम वर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी ऊंचा होगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी तथा शरीर के अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे। साथ ही उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा। सौन्दर्य की अभिवृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग करेंगी लेकिन शरीर में स्थूलता का अभाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आधुनिक भौतिक उपकरणों के प्रति भी आकर्षण बना रहेगा।

सप्तम भाव में राहु के प्रभाव से आपका विवाह विलम्ब से होगा तथा विवाह पूर्व भी आपको किंचित परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। आपका विवाह किसी वयोवृद्ध संबंधी के द्वारा सम्पन्न होगा या राहु के प्रभाव से आप प्रेम विवाह या अंतर्जातीय विवाह भी स्वेच्छा से कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा एवं आपस में एक दूसरे प्रति प्रेम तथा आकर्षण होगा परन्तु यदा कदा उनकी तेजस्वी वृति से आपकी परेशानी हो सकती है लेकिन बुद्धिमता से सामंजस्य स्थापित करने में समर्थ होंगे।

आपका विवाह सामान्य परिवार में सम्पन्न होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति भी साधारण रहेगी। विवाह में ससुराल से आप को दहेज या वांछित धन सम्पति की प्राप्ति नहीं होगी तथा बहुमूल्य उपहारों में भी न्यूनता रहेगी। सास ससुर से आपके संबंधों में विशेष अपनत्व नहीं रहेगा तथा यथोचित सम्मान की भी न्यूनता होगी। साथ ही वे भी आपको विशेष महत्व प्रदान नहीं करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा भाव नहीं होगा तथा सुख दुख में उनका कोई ध्यान नहीं रखेंगी जिससे सास ससुर उनसे अप्रसन्न रहेंगे। देवर एवं ननदों को भी वह अपने उग्रव्यवहार से असन्तुष्ट रखेंगी जिससे वे भी उनको यथोचित सम्मान एवं स्नेह प्रदान नहीं करेंगे इससे परिवार की शांति प्रभावित होगी।

व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी अतः साझेदारी के कार्यो की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी

चाहिए।

RATNA JYOTI

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। इसके प्रभाव से आप ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि पर विश्वास कम ही करेंगे क्योंकि आप एक व्यावहारिक पुरूष होंगे तथा अनावश्यक समय बर्बाद करना या स्वप्न देखना आपको अच्छा नहीं लगता। पैतृक सम्पत्ति आपको प्राप्त होगी लेकिन प्रचुर मात्रा में नहीं परन्तु इसका आप पर कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा क्योंकि स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपके पास प्रचुर मात्रा में धन ऐश्वर्य होगा। साथ ही आवश्यक सुख संसाधन भी उपलब्ध होंगे। आप का दहेज के लेन देन में कोई विश्वास नहीं रहेगा तथा न ही आप उसे स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आप इस सामाजिक बुराई के प्रति अन्य जनों को भी जागरूक करने के लिए तत्पर रहेंगे।

जीवन में यदा कदा आपके घर में कोई चोरी आदि की भी संभावना है लेकिन यह सामान्य होगी तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा पुलिस या अन्य जनों की सहायता से आपका चोरी का समान वापस मिल जाएगा जिससे हानि नहीं होगी। बीमा आदि करने से आपको कोई विशेष लाभ नहीं होगा। अतः आप इस पर अनावश्यक रकम या पूंजीनिवेश न करें। केवल चोरी के मामलों में प्रौढ़ावस्था में आपको बीमे का लाभ मिल सकता है।

शारीरिक सुरक्षा के प्रति आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए तथा अनावश्यक जोखिम नहीं लेना चाहिए क्योंकि न्यूनाधिक रूप से आप दुर्घटना से कष्ट प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सामान्यतया सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका समय व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से धर्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित दौरान आपकी- मन में इसके लिए पूर्ण श्रद्धा तथा निष्ठा रहेगी। ध्यान या समाधि के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगे। आपकी अर्न्तदृष्टि प्रबल रहेगी अतः ज्योतिष एवं तंत्र मंत्र में सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही धर्माचार्य या कोई उपदेशक भी हो सकते हैं। आप नियमित रूप से भगवत पूजा करेंगे तथा वेद एवं आध्यात्मिक विषयों पर आपकी विद्वता रहेगी तथा इन विषयों पर आप धाराप्रवाह, लम्बे समय तक भाषण या उपदेश देने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप किसी धार्मिक संस्था के संस्थापक संचालक या अध्यक्ष अथवा सक्रिय सदस्य भी हो सकते हैं।

अपने व्यवसाय में आप कुशल रहेंगे इससे समाज से ख्याति तथा मान सम्मान अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आप रूचिशील तथा प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही आध्यात्मिक तथा धार्मिक ग्रंथों का भी व्यक्तिगत रूप से अध्ययन करेंगे। दैनिक पूजन आदि करने से आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति विकसित होगी फलतः आपके पूर्वाभास सत्य होंगे तथा अन्य जनों के प्रति सही भविष्यवाणियां भी करने में समर्थ रहेंगे।

लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको प्रसिद्धि तथा धनऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। आप दूसरे शहर या देश में किसी धार्मिक संस्था की स्थापना भी कर सकते हैं। साथ ही परोपकार तथा सामाजिक जनों की भलाई के लिए कार्य करने में तत्पर रहेंगे अपने पौत्रों से आपको इच्छित सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी तथा पूर्वजन्म के पुण्यों से इस जीवन में आनन्द एवं ऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक साधुजनों के सेवक मंदिर तालाब आदि परोपकार के लिए बनाने वाले एवं आर्थिक रूप से सुसम्पन्न रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही चन्द्रमा भी दशमभाव में ही स्थित है। मेष राशि अग्नितत्व एवं चन्द्रमा जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रम की इसमें अल्पता होगी। साथ ही समयानुसार आप इसमें परिवर्तन भी करते रहेंगे जिससे आपको वांछित लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी।

व्यापारिक दृष्टि से आप जलोत्पन्न पदार्थो यदा मोती, शंख, प्रबल मछली आदि का व्यापार, मिट्टी के खिलौने, बालू, ईट आदि का कार्य, द्रव पदार्थ यथा दूध, दही, धी, सफेद एवं मूल्यवान वस्त्र तथा समुद्री आयात निर्यात से भी आप व्यापार द्वारा वांछित धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। यदि आप व्यापार के इच्छुक हैं तो आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार प्रारंभ करना चाहिए जिससे आपको अधिक मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। साथ ही इस क्षेत्र में विशिष्ट उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे।

दशमभाव में मेषराशिस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्च पद एवं अधिकार को अर्जित करने में सफलता मिलेगी। साथ ही आप किसी सामाजिक धार्मिक या शैक्षणिक संस्था में कोई पदाधिकारी भी हो सकते है इस सबसे आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। फलतः लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त सौभाग्य से भी आप जीवन में विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आपके पिता विद्वान बुद्धिमान, एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनके आकर्षक व्यक्तित्व से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। साथ ही वे भी समाज के हित के कार्य कलापों में तत्पर होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं अपनत्व का भाव होगा। एवं आपकी शिक्षा के प्रति वे पूर्ण सतर्क रहेंगे तथा उच्चस्तर पर इसका समुचित प्रबंध करेंगे। आपके कार्य क्षेत्र में पिता का सहयोग मुख्य होगा तथा उन्हीं के प्रभाव से आपको प्रसिद्धि तथा सफलता मिलेगी। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। साथ ही कोई भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य उन्हीं की सलाह से सम्पन्न करेंगे इससे आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपके मन में विभिन्न सांसारिक इच्छाएं विद्यमान रहेंगी साथ ही महत्वाकांक्षा के भाव से भी युक्त रहेंगे तथा इन सबकी प्राप्ति जीवन में दृढ़ता एवं परिश्रम से करने में समर्थ रहेंगे। प्रचुर मात्रा में आय के साथ साथ आपकी बचत करने की प्रवृत्ति भी रहेगी अतः आर्थिक रूप से आपको कभी परेशानी नहीं होगी। बड़े भाई बहिनों से आपको विशिष्ट सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा साथ ही आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता विद्यमान रहेगी।

आप सक्रिय प्रवृत्ति के लोगों को मित्र बनाना पसन्द करेंगे तथा वे आपके लिए विश्वसनीय भी रहेंगे। मित्र मंडल में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा अपने कलात्मक तरीकों से आप मित्रों तथा अन्य जनों का मनोरंजन करने में तत्पर रहेंगे। आपका मित्रता का क्षेत्र कला संगीत या नाटक आदि के ज्ञान को रखने वाले व्यक्तियों से अधिक रहेगा। इस प्रकार सम्पूर्ण जीवन मित्रों के सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा समाज में एक आदरणीय तथा प्रतिष्ठित पुरूष समझें जाएंगे। साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा सहयोग प्रदान करना अपना कर्तव्य समझेंगे। यदा कदा आप स्वयं अत्यंत ही एकाकीपन की अनुभूति भी करेंगे। जीवन में आपको समाजिक सम्मान की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी। साथ ही खेल आदि के क्षेत्र में भी में भी आप दक्षता प्राप्त कर सकते है । इस प्रकार आपका सामान्य जीवन भौतिक सुख सुविधाओं से युक्त होकर व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत को मानने वाले व्यक्ति होंगे तथा आजीवन इसका अनुपालन करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यंत ही सतर्कता का परिचय देंगे। आप एक ईमानदार व्यक्ति होंगे अतः बेईमानी को सहन करने में असमर्थ रहेंगे साथ ही धन को आप अपने परिश्रम एवं योग्यता से अर्जित करेंगे। इस प्रकार सामान्य रूप से आर्थिक क्षेत्र में आप भाग्यशाली रहेंगे।

जीवन में आपको आर्थिक समस्याओं से नहीं जूझना पड़ेगा। आपकी आवश्यकताएं अत्यंत ही सीधी सादी होंगी क्योंकि आप भौतिकता की ओर नहीं भागते तथा सामान्य रूप से ही आवश्यक वस्तुओं को घर में रखेंगे। आप शीघ्र लाभ की अपेक्षा दीर्घावधि लाभ के प्रति अधिक इच्छुक रहेंगे। प्रारंभ से ही धन संग्रह के प्रति आपकी रूचि रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ बचत भी करेंगे। अतः आपके समस्त पारिवारिक एवं सांसारिक व्यय आवश्यक रहेंगे जिससे आर्थिक स्थिति विशेष प्रभावित नहीं होगी। अपनी समृद्धि के द्वारा भविष्य में कल्याण संबधी योजनाओं पर भी आपका व्यय होगा तथा अपने धन को बड़ी बड़ी योजनाओं या निवेशों में लगाएंगे जहां से आपको अधिक लाभ की प्राप्ति होगी।

परिवार की आप पूर्ण चिन्ता करेंगे तथा उनकी समृद्धि एवं खुशहाली के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही एक मित्र की तरह उनका पालन करेंगे। आपकी समय समय पर लम्बी दूरी की यात्राएं भी होगी जिससे लाभ होगा। आपकी यात्राएं विभागीय या व्यापार संबधी होंगी। साथ ही जीवन में आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इस प्रकार सामान्य रूप से प्रसन्न रहेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2019

इस वर्ष शनि धनु राशि में षष्ठम भाव में रहेंगे। 23 मार्च को राहु मिथुन राशि में द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 मार्च को गुरू धनु राशि में षष्ठ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 23 अप्रैल को वृश्चिक राशि में पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 05 नवम्बर को धनु राशि में षष्ठ भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः शुभ फलदायक रहेगा। यह वर्ष आपके व्यवसाय व नौकरी में परिवर्तन तथा उन्नति के योग लेकर आ रहा है। आप नये प्रयोग करने में अवश्य ही सफल होंगे। अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति हेतु आप यात्राएं भी करेंगे।

व्यवसाय में विदेश से संबंधित कार्य योजनाओं को बढ़ावा दिया जा सकता है। यदि आप किसी नये कार्य में निवेश करना चाहते हैं तो समय उपयुक्त है। छठे स्थान का शनि नौकरी करने वालों काअनुकूल स्थान पर स्थानांतरण करा सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी लेकिन परिवार में अधिक खर्च होने के कारण बचन नहीं कर पायेंगे। लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य पर भी धन खर्च करा सकता है।

निवेश के मामलों में सफलता प्राप्ति होगी। आप यात्रा, संतान की उन्नति तथा घर में मांगलिक कार्यों पर धन का व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। संतान के साथ संबंधों में सुधार होगा तथा उनकी विशेष उन्नति भी होगी।

पंचमस्थ गुरू के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियो को संतान सुख की प्राप्ति होगी। भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथासामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। छठे स्थान के शनि के प्रभाव से आपको मामा का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा आपके शत्रु परास्त होंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। पंचमस्थ गुरू के प्रभाव से नव विवाहित व्यक्यिों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। यह समय गर्भाधान के लिए उपयुक्त है। आपके बच्चों का उन्नती होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने है। यदि आप का बच्चा

विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो सकता है। बच्चे का पूर्ण सहयोग आपको प्राप्त होगा। आपके बच्चे के प्रभाव से आपका मान सम्मान बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से यहवर्ष अनुकूल रहेगा। 23 मार्च के बाद स्वास्थ्य और अधिक अनुकूल हो जाएगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या को सुनियोजित करें। वर्ष भर आपकी कार्य क्षमताएं विकसित होती रहेंगी। अप्रैल माह में स्वास्थ्य के मामले में हल्का फुल्का उतार चढ़ाव संभव है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा के लिए यह वर्ष काफी अच्छा रहेगा। छठे स्थान में शनि के प्रभाव से आप प्रतियोगी परीक्षाओं मे सफलता प्राप्त करेंगे। यदि आप विदेश जा कर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय बहुत अनुकूल है।

जो व्यक्ति परामर्श दाता या तकनीकि कार्य कर रहे हैं उनको अपने करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। इस वर्ष आप अपने सभी शत्रुओं को परास्त करके सबसे आगे रहेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा। इस वर्ष आपकी बहुत सी व निरंतर तथा हर प्रकार की यात्राएं होंगी। कुल मिलाकर यह वर्ष यात्राओं वाला व निवेश वाला वर्ष रहेगा तथा आप इन यात्राओं पर विशेष व्यय भी करेंगे।

नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक यात्रा के प्रबल योग बने हुए हैं ।विदेश जाकर उच्चशिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए बहुत समय उपयुक्त है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष बहुत अनुकूल रहेगा। धर्म स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपका मन धार्मिक कार्योंकी ओर आकृष्ट होगा। आप अपने गुरूजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। समय समय पर आप गरीबों की सहायता करेंगे तथा धार्मिक अनुष्ठान यज्ञ आदि करेंगे।

- दुर्गा बीसा कवच अपने गले में धारण करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और उसके सामने प्रतिदिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2020

इस वर्ष शनि 24 जनवरी को मकर राशि में सप्तम भाव में प्रवेश रहेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में राहु मिथुन में द्वादश भाव में होंगे और 19 सितम्बर के बाद वृष राशि में एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 30 मार्च को गुरू मकर राशि में सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे एवं वक्री होकर 30 जून को धनु राशि में षष्ठ भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 20 नवम्बर को मकर राशि में सप्तम भाव में आजाएंगे। 31 मई से 8 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आप किसी नयी योजना की तलाश में होंगे और बहुत जल्दी ही अपनी गुप्त योग्यताओं के चलते किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलकर कार्य प्रारंभ करने में सफल हो सकेंगे।

30 मार्च से जून प्रयन्त सप्तम भाव पर गुरू एवं शनि की युति प्रभाव से व्यापार में उन्नति का प्रबल योग बन रहा है। इस समय कार्य व्यवसाय में आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। यदि आप किसी के साथ मित्रता में व्यवसाय कर रहें है तो ईच्छित लाभ की प्राप्ति होगी और अपने साझेदार से आप संतुष्ठ रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्षारम्भ में छठे स्थान का गुरू आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव का योग बनाएं रखेंगे। अचानक खर्चे से आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

आप किसी मांगलिक कार्य पर धन का व्यय करेंगे। 29 जून के बाद फिर से समय प्रतिकूल हो जाएगा। उस समय शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अच्छी तरह सोच-विचार कर निर्णय लें यह समय जोखिम उठाने के लिए उपयुक्त नहीं है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि व राहु के दृष्टि प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

30 मार्च से जून पर्यन्त सप्तम भाव पर गुरू एवं शनि की युति प्रभाव से विवाह की सम्भावनाएं बनेंगी। जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आपके मित्र भी आपसे संतुष्ट रहेंगे। 29 जून के बाद समय फिर से प्रभावित हो जाएगा। उस समय अपने परिवार पर ज्यादा से ज्यादा समय देना चाहिए।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नही है। छठे स्थान में गुरू ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छ नही होता। इस वर्ष आपको अपने संतान को लेकर चिन्ताएं बढ़ सकती हैं।

उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। साथ ही उसका पढ़ाई में भी मन नहीं लगेगा।

30 मार्च से जून पर्यन्त समय कुछ अनुकूल होगा। यदि आप का दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो सकता है। जून के बाद फिर से समय प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

गुरू के छठे स्थान में अग्नि तत्व राशि में होने के कारण पेट संबंधित या पित्त संबंधित परेशानी बनी रहेगी। 30 मार्च से जून पर्यन्त लग्न स्थान पर गुरू एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य जल्दी ही अच्छा हो जाएगा।

29 जून के बाद गुरू ग्रह का गोचर फिर छठे स्थान में होगा। उस समय आपको अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना होगा नहीं तो फिर से कुछ कठिनाइयां आ सकती हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि आप प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करना चाहते है तो आपको अत्यधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अतः आप केवल अपने अध्ययन की ओर ही मन को लगायें। उच्च शिक्षा के अभिलाषी जातक अपनी रूचि अनुसार कार्य क्षेत्रों में सफलता अपेक्षाकृत कम ही प्राप्त कर पायेंगे।

30 मार्च से जून पर्यन्त व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक ठाक रहेगा। व्यापारिक व्यक्तियों को व्यवसाय से सम्बन्धित यात्राएं होंगी। यह यात्रा आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगी।

द्वादशस्थ राहु पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण के योग बने हुये हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष सामान्य फल दायक रहेगा। नित्य पूजा पाठ करते रहेंगे। लेकिन नवम स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण विशेश पूजा करने में बाधा उत्पन्न हो सकती है।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले में धारण करें, एवं राहु मन्त्र का पाठ करें।
- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रुषा करें।

वार्षिक फलादेश - 2021

इस वर्ष शनि मकर राशि में सप्तम भाव में और राहु वृष राशि में एकादश भाव में रहेंगे। 6 अप्रैल को गुरु कुम्भ राशि में अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 सितम्बर को मकर राशि में सप्तम भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर फिर से 20 नवम्बर को कुम्भ राशि में अष्टम भाव में आजाएंगे। मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 17 फरवरी से 19 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि सेयह वर्ष विशेष शुभ होगा तथा आपको व्यवसाय में सफलता, उन्नति तथा नये व्यापार से लाभ उठाने के अवसर भी प्राप्त होंगे।यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगें।

आमदनी के नये- नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की पूर्ण सम्भावना है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा व नौकरी करने वालों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान की प्राप्ति होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत शुभरहेगा। एकादश स्थान स्थित राहु अचानक धन प्राप्ति के योग बना रहे हैं। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेगें और निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे। अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

आप परिवार में मांगलिक कार्यों में धन खर्च करेंगे। यदि कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो उसके लिए भी समय अनुकूल है। आपके अपने ससुराल पक्ष से भी धन लाभ हो सकता हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके भाईसफल व प्रसन्न रहेंगे। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बन जाएगा। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि का योग बन रहा है। इस वर्ष विवाह की कुछ सम्भावनाएं हैं जो विशेष प्रबल नहीं हैं।

सन्तान के लिए यह समय वर्षभर कुछ परेशानियों व उतार-चढ़ाव के संकेत लेकर आ रहा है। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण समाजिक प्रतिष्ठा मे बढोतरी होगी।

संतान

सन्तान के लिए यह समय वर्षभर कुछ परेशानियों व उतार-चढ़ाव के संकेत लेकर आ रहा है। संतान के स्वास्थ्य के मामले में यह वर्ष चिन्ताजनक है।पंचम स्थान पर केतुकी

स्थितिआपकी संतान को विपरीत परिस्थितियों में भी तेजस्वी बनाए रखेगी।

14 सितम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से सप्तम स्थान में होगा। उसके बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।आपकीदूसरी सन्तान के लिए समय बहुत अच्छा रहेगा। उसका विवाह संस्कार होने की अल्प सम्भावनाएं हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि से मन में अच्छे विचार आएंगे। जिससे प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आप अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए सन्तुलित आहार की जानकारी एकत्र करने में रुचि लेंगे व ध्यान तथा योग क्रियाएं आदि किसी योग्य व्यक्ति के मार्गदर्शन में सीखेंगे।

यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है। उसके बाद फिर से अनुकूल हो जाएगा। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें स्वास्थ्य में समस्याएं नहीं आएंगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।यदि आप प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको समय अधिक अनुकूल न होने के कारण कठिन परिश्रम की आवश्यकता रहेगी।

उच्च शिक्षा के अभिलाषी जातक अपनी रुचि अनुसार कार्य क्षेत्रों में सफलता अपेक्षाकृत कम ही प्राप्त कर पायेंगे। 6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में होगा। अपने मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य पर केन्द्रित करें।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष आप अपने स्थान पर ही प्रसन्न व अपने कार्यों में संलग्न रहेंगे तथा यात्रा आदि में अधिक दिलचस्पी नहीं लेंगे। नौकरी करने वालों का अल्प समयान्तराल के लिए स्थानान्तरण होगा।

गुरु का अष्टम व सप्तम स्थान का गोचर अल्प समय के लिए किसी आवश्यक कार्य की वजह से ऐसी यात्रा करवा सकता है जिससे आप विशेष प्रसन्न नहीं होंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप पंचमस्थ केतु के प्रभाव से मन्त्र जाप, ब्राह्मण कर्म, ज्योतिष कार्यों में रुचि, वेदान्त दर्शन का अध्ययन तथा गुप्त विद्याओं की साधना में तत्परता से जुटे रहेंगे तथा अपने ज्ञान व बौद्धिक क्षमता से लोगों को प्रभावित करने में सक्षम होंगे।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें वअर्घ्य प्रदान करें।
- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने घी का दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन व्रत करें व पीली वस्तु का दान करें।

RATNA JYOTI

वार्षिक फलादेश - 2022

इस वर्ष 13 अप्रैल को गुरु मीन राशि में नवम भाव में और 17 मार्च को राहु मेष राशि में दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अप्रैल को शनि कुम्भ राशि में अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 12 जुलाई को मकर राशि में सप्तम भाव में आजाएंगे। 30 सितम्बर से 21 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य शुभ फलदायक रहेगा। वर्षारंभ में कुछ कठिनाईयां रह सकती हैं इसके अतिरिक्त मई, जून व जुलाई के महीनों में भी कुछ समस्याएं अनायास ही उत्पन्न हो सकती हैं परंतु आप अपने परिश्रम व आत्मविश्वास तथा कार्यों में आप अपनी दक्षता के बल पर सफलता प्राप्त करेंगे। सप्तम स्थान में शनि ग्रह के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में सफल होंगे।

कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावट डाली जा सकती है। इसलिए सावधानी से अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्य स्थल पर मान सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष का सामान्य रहेगा। एकादश स्थान का राहु आपको अचानक धन लाभ कराने का योग बना रहे हैं। जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपकी आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत कर सकते हैं। मांगलिक व सामाजिक कार्यों तथा बच्चों की शिक्षा पर आप धन का व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान संबंधी चिंताएं समाप्त होंगी तथा सामाजिक प्रतिष्ठा में बढोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़ चढ़ कर भाग लेंगे। आपके छोटे बाई बहनो का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा ।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। संतान के स्वास्थ्य, शिक्षा तथा रोजगार के क्षेत्रों में आनेवाली रुकवाटों के चलते आपकी चिंताएं बढेंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चों के लिए बेहतर समय का आगमन होगा तथा संतान संबंधी चिंताएं पूर्णतया समाप्त होंगी व नव विवाहित व्यक्तियो को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा आदि के क्षेत्र में भी सुधार होने लगेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नही रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मौसम जनित बीमारियों से थोडी परेशानी हो सकती है। अपने खान पान के साथ साथ आपनी दिनचर्या सुधारें व सुबह सुबह शुद्ध हवा में व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रूचि बढ़ेगी जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रारम्भ में प्रतियोगिता परीक्षाओ में सफलता की दृष्टि से सामान्य ही रहेगा। लगातार अथक परिश्रम की आवश्यकता है।

यदि आप उच्च शिक्षा हेतु उच्च संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में सफलता मिल जाएगी। जिन जातक की नौकरी अभी नहीं लगी है उन लोगों को कुछ समय के लिए इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान का शनि व्यापारिक व्यक्तियो को व्यवसाय से संबंधित यात्राए करा सकते है।

द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा कर सकते हैं। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप अपनी जन्मभूमि के साथ-साथ धार्मिक यात्राए भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों में बाधा उत्पन्न करते है। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नही रहेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका मन धार्मिक कार्यों में आकृष्ट होगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।

• प्रति दिन विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।

RATNA JYOTI

वार्षिक फलादेश - 2023

इस वर्ष 22 अप्रैल को गुरु मेष राशि में दशम भाव में 17 जनवरी को शनि कुम्भ राशि में अष्टम भाव में और 22 नवम्बर को राहु मीन राशि में नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वक्री मंगल 13 जनवरी को मार्गी हो जाएंगे और पूरे वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 4 अगस्त से 18 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कुछ प्रतिद्वन्दिओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं परन्तु सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

22 अप्रैल के बाद वरिष्ठ लोगों याउच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी में पदोन्नति होगी। भूमि से सम्बन्धित कार्योंमें लाभ प्राप्त होगा। स्वतन्त्र व्यवसाय में अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु अधिक खर्च होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। धन के अपव्यय से बचें।

22 अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्न आभूषण इत्यादि के क्रय की योजना बनेगी। परिवार में मांगलिक कार्यों पर धन का व्यय होगा। यदि कोइ बडा निवेश करना चाहते हैं तो कुछ समय के लिए ऐसी योजनाओं को स्थगित रखें।यदि संपत्ति पर कोई बाद विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके लिए अधिक अनुकूल प्रतीत नहीं होता।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान पर राहु केतु के प्रभाव से परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है परन्तुअपनी सूझ-बूझ वआत्मविश्वास से उसे भी आप अनुकूल बना लोगे। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रवाभ से आपको समाजिक पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ती होगी।

22 अप्रैल के बाद पारिवारिक रूप से समय अनुकूल होने लगेगा तथा बड़े सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी और परिवार के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पिता के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। आपके ससुराल पक्ष से मनमुटाव होने की सम्भावना है अतः सावधानी बरतें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे आगे बढ़ेंगे और हर अवसर का समुचित लाभ उठायेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

आपके बच्चे नौकरी में उन्नति करेंगे। यदि आपकीसन्तान विवाह योग्य है तो विवाह निश्चित है।दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है।

स्वास्थ्य

अष्टम स्थान का शनि अचानक ही स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। खाने-पीने की वस्तुओं में सावधानी बरतें। वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होने से स्वास्थ्य में अधिक गिरावट नहीं आयेगी परन्तु छोटी-मोटी समस्याओं, चिन्ताओं व बेचैनी से कार्य क्षमता प्रभावित होगी।

कभी कभी स्वास्थ्य रहते हुए भी कमजारी जैसा अनुभव होता रहेगा। ऐसी स्थिति में शारीरिक दुर्बलता व मानसिक तनाव को कम करने के लिए योग व व्यायाम का सहारा लें।नित्य प्रति मन्त्र जाप करें, सूर्य को जल दें तथा प्रातःकालीन शुद्ध हवा में प्राणायाम करके मानसिक तनाव से मुक्ति पायें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल है। पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा योग बना रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

22 अप्रैल के बाद षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी। इस वर्ष आपको रोजगार प्राप्ति के योग भी बने हुए हैं।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में तृतीय स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटीयात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से लम्बी यात्राओं का भी योग है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति होगी। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता होगी।

नौकरी मेंस्थानान्तरण होगा। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल आपका धन चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। जिससे परमात्मा के प्रति आत्म समर्पण का भाव उत्पन्न होगा। 11 नवम्बर के बाद तन्त्र यन्त्र मन्त्र इत्यादि गुप्त विद्याओं के प्रति आपका मन आकर्षित होगा।

- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढाएंऔर हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं गरीबों को लोहे का तवा दान करें।
- अपने घर में लड्डु गोपाल की मूर्ति रखें एवं प्रतिदिन विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।

RATNA JYOTI

दशा विश्लेषण

महादशा :– चन्द्र
(10/05/2010 - 10/05/2020)

चन्द्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 10/05/2010 को आरंभ और 10/05/2020 को समाप्त होगी।

चन्द्र दशम भाव में अवस्थित है। दशम भाव प्रतिष्ठा, सार्वजनिक सम्मान, शक्ति तथा इज्जत, सफलता तथा साख, आदर तथा ख्याति, उत्तरदायित्व, पदोन्नति, नियुक्ति, उच्च पद, शासन से सम्मान का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि आपके लिए शुभ होगी और आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आपको सुखमय तथा उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। इस अवधि में किसी बड़े रोग या चोट की संभावना नहीं है और आप बिना किसी बाधा के स्वस्थ जीवन का आनन्द लेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

चन्द्र वाहन का प्रतिनिधित्व करता है। इस अवधि में आप अपनी सम्पत्तियों और आर्थिक स्थिति का विस्तार करने में सफल होंगे। आपकी चल-अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। आपके बैंक-बैलेंस में भी वृद्धि होगी और इस तरह आप समृद्धिशाली होंगे।

व्यवसाय :

चंद्र दशम अर्थात् अपने ही भाव में अवस्थित है और दशम भाव व्यवसाय और जीवन-वृत्ति का प्रतीक है। इसलिए आप अपने व्यवसाय में अत्यधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपको आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। यदि आप सेवारत हैं तो जीवन में उन्नति के अनेक अवसर आपको मिलेंगे और आप प्रगति करेंगे। यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके मस्तिष्क में नये व्यवसायों के अनेक विचार उभरेंगे। व्यवसाय में आपकी साख तथा स्थिति में वृद्धि होगी। श्रेष्ठजन तथा सहकर्मी आपके विचारों की सराहना करेंगे और आप व्यवसाय में अगुआ होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आप का पारिवारिक जीवन सुखमय होगा क्योंकि आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपके जीवन साथी आप की व्यावसायिक वृत्ति में भी सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप अध्यात्म की उच्च शिक्षा भी प्राप्त करेंगे। आप पुराणों और आध्यात्मिक ग्रन्थों का अध्ययन भी करेंगे।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(10/03/2018 - 09/11/2019)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 10/05/2010 को प्रारंभ होकर 10/05/2020 को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 10/03/2018 को प्रारंभ होकर 09/11/2019 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है। इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सक्रियता बढ़ेगी, जीवन हंसी-खुशी से गुजरेगा। अत्यधिक वासना और विवाहेतर संबंधों से बचें।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें।

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
(09/11/2019 - 10/05/2020)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 10/05/2010 को प्रारंभ होगी और 10/05/2020 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 09/11/2019 से प्रारंभ होकर 10/05/2020 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मपत्रिका में सूर्य प्रथम भाव (लग्न) में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य भाग्य, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। सूर्य पिता का कारक है और आत्मा का प्रतिनिधि है। प्रथम भाव में स्थित होकर सूर्य जन्मपत्रिका के सप्तम भाव पर दृष्टिपात कर रहा है।

इस अवधि में आपका शरीर गर्म रह सकता है और स्वास्थ्य कमजोर हो सकता है। खुशियां कम रहेंगी। आप सिद्धांतहीन, अमानवीय, और चरित्रहीन हो सकते हैं। परिवार में विच्छेद हो सकता है। आप महत्वाकांक्षी और सत्ताभक्त होंगे। आपका खुशमिज़ाज और आशावादी स्वभाव आपको लोकप्रिय बनाएगा, व्यक्तित्व चमकेगा।

महादशा :- मंगल
(10/05/2020 - 11/05/2027)

मंगल की महादशा 10/05/2020 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 11/05/2027 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल सप्तम भाव में अपनी ही राशि में स्थित है और आपकी कुण्डली में अति शक्तिशाली रुचक योग की रचना कर रहा है। मंगल की दृष्टि चतुर्थ, पंचम और प्रथम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। चन्द्र के लग्न का स्वामी होने के कारण आपको सम्पत्ति, आरम्भ, सुख और उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, उच्च सम्मान की प्राप्ति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें स्फूर्ति और पहलशक्ति होगी और आप पूरी दशा के दौरान सक्रिय रहेंगे। आप प्रतिस्पर्धी तथा स्वतंत्र होंगे और आप में रोगों से लड़ने की क्षमता होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको तापसंबंधी बीमारी, फोड़ा या संक्रामक बीमारी हो सकती है। आपकी कुछ छोटी मोटी दुर्घटनाएं हो सकती हैं। उन्हें छोड़कर आमतौर से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ होगा। आपकी खुद की कमायी सम्पत्ति होगी। आपको जमीन-जायदाद तथा माता से लाभ होगा। इस अवधि में आपकी प्रतिष्ठा, शक्ति और अधिकार में उन्नति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी। आपको सफलता, ख्याति तथा सम्मान मिलेगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय या पुलिस क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। आप योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में अच्छा करेंगे। आप सामुद्रिक पदार्थों तथा कुटीर उद्योग अपना सकते हैं। आप एक सफल सर्जन या देतचिकित्सक हो सकते हैं या आपकी एक सफल तकनी की अथवा कृषि वृत्ति हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता मिलेगी और आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा।

व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी, कर्मचारियों की आय में वृद्धि, लाभ की प्राप्ति तथा पद में उन्नति होगी। व्यवसाय में प्रगति और उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप अपने वाहन को बदल कर नया ले सकते हैं। बुध की अन्तर दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी। जमीन-जायदाद के मामलों के लिये यह दशा उत्तम है। आपको जमीन जायदाद तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

जमीन-जायदाद के सारे मामले आपके लिये लाभदायक होंगे।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षा में सफल होंगे और किसी प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। तकनीकी विषय आपके लिए शुभ होंगे। आप विज्ञान, गणित, इन्जीनियरिंग, प्रौद्योगिकी आदि पसन्द करेंगे। आप उच्च शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और उसमें बहुत अच्छा करेंगे। इस दशा के दौरान आप व्यवसायिक प्रशिक्षण ग्रहण कर सकते हैं। आपकी नेतृत्व तथा संगठन क्षमता सामने आएगी।

परिवार :

परिवार में आप के सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपको आपके बच्चे से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सुन्दर रहेगा। आपके जीवन साथी की जीवन वृत्ति सक्रिय होगी, आय में वृद्धि और लाभ की प्राप्ति होगी। अपने परिवार की शान्ति के लिए व्यवहार कुशलता तथा शान्ति से कार्य लेना होगा। आपकी माता को कुछ स्वस्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें लाभ का अवसर मिलेगा। आपके पिता को लाभ, समृद्धि तथा सम्पत्ति को प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में परिवर्तन, अचानक धन तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। बड़ों का व्यय, यात्रा तथा परिवर्तन होगा। आपके मित्रों तथा परिचितों की संख्या विशाल होगी। आपको ख्याति मिलेगी और आप अपनी नेतृत्व व संगठन की क्षमता के कारण जाने जाएंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके व्यवसाय में प्राप्ति होगी और आपको यश, ख्याति, प्रतिष्ठा और बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति, जमीन-जायदाद तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ परिवर्तन, स्वास्थ्य-समस्या और साझेदारी में लाभ मिलेगा। इसके बाद बुध की अन्तर्दशा के कारण आपकी यात्रा और व्यय होगा जबकि केतु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ मानसिक तनाव होगा। शुक्र की अन्तर्दशा के कारण सुख, परिवार का आनन्द और लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा आपको आराम और धन का लाभ दिलायेगी जबकि चन्द्र यश, ख्याति, सफलता तथा सुख देगा।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(10/05/2020 - 06/10/2020)

आपके लिए मंगल की महादशा 10/05/2020 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 10/05/2020 को प्रारंभ होकर 06/10/2020 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप परिश्रम और योग्यता के बल पर खूब धन कमाएंगे। जिन कामों में ऊर्जा और दक्षता की जरुरत हो, वहां आप कामयाब होंगे। अचल संपत्ति में निवेश करेंगे या वर्तमान मकान आदि की मरम्मत करवाएंगे। परिवार में शांति बनाये रखने के लिए प्रयास करने होंगे।

आप उत्साही और ऊर्जावान होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पहले किये गये निवेश से लाभ हो सकता है। जल्दबाजी में फैसले न करें। संतान के स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखना पड़ सकता है।

आपके जीवनसाथी भी खूब ऊर्जावान होंगे। आपके पिता को धनलाभ, घरेलू सुख का योग है। माता को साझेदारी से लाभ हो सकता है, उनकी यात्राएं हो सकती हैं। भाई-बहनों के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। खर्चे बढ़ेंगे।

आपकी संतान परीक्षा में सफल होगी; उनकी तकनीकी और विस्तृत कार्यो में रुचि होगी। अगर वे सेवारत हैं तो विरोधियों पर विजयी होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो समृद्ध बनेंगे; प्रोन्नति या वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। व्यापारियों और तकनीकी विशेषज्ञों को सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; मामूली तकलीफ हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(06/10/2020 - 24/10/2021)

आपके लिए मंगल की महादशा 10/05/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 06/10/2020 को प्रारंभ होकर 24/10/2021 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आपके विदेशियों से व्यापारिक संबंध बन सकते हैं। शत्रुओं पर विजय होगी। विपरीत लिंग के लोगों से लाभ हो सकता है। जनसंपर्क बढ़ेगा। विवाह हो सकता है। विवाह से धनलाभ होगा। जीवन में खूब तरक्की होगी। आप साहसी और तीव्रता से निर्णय लेने वाले होंगे। सम्मान और उच्चपद का संकेत है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता धनार्जन करेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी; उनके धन में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहन निवेश और सट्टेबाजी से लाभ कमा सकते हैं।

आपकी संतान को परिश्रम करना होगा। उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर से कार्यरत हैं तो खूब धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता तरक्की करेंगे। व्यापारी धनी बनेंगे और अनुबंधों पर हस्ताक्षर करेंगे।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- मंगल - गुरु
(24/10/2021 - 30/09/2022)

आपकी मंगल की महादशा 10/05/2020 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 24/10/2021 को प्रारंभ होकर 30/09/2022 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपको सब सुख उपलब्ध रहेंगे। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। धन और सम्मान में वृद्धि होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। कार्यक्षेत्र में अचानक सकारात्मक परिवर्तन हो सकता है। संतान का जन्म संभव है। विवाह हो सकता है। चुनाव में या कार्यों में सफलता मिल सकती है। मुकदमे में विजय होगी। घरेलू सुख रहेगा। लंबी यात्रा या तीर्थयात्रा संभव है। नये अवसर उपलब्ध होंगे।

आपके जीवनसाथी को उच्चपद और धन का लाभ हो सकता है। पिता को सट्टेबाजी से लाभ संभव है। माता को सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी, तीर्थयात्रा करेंगी। आपके भाई-बहन धन कमाएंगे; कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे; उनकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, ज्ञानार्जन करेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो समृद्ध बनेंगे, लंबी यात्राएं होंगी, प्रसिद्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अचानक लाभ और सकारात्मक परिवर्तन का योग है। परामर्शदाता अचल संपत्ति क्रय करेंगे; धनी बनेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम होंगे। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले अनाज, स्वर्ण और हल्दी का दान करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शनि
(30/09/2022 - 09/11/2023)

आपके लिए मंगल की महादशा 10/05/2020 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 30/09/2022 को प्रारंभ होकर 09/11/2023 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेंगे। जिम्मेदारियों को धैर्य और कार्यकुशलता से निभाएंगे। सफलता अधिकारियों से संघर्ष के उपरांत मिलेगी। खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्रा हो सकती है। समाजसेवा और दान आदि में रुचि रहेगी। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उत्साह बना रहेगा। अध्ययन और परिश्रम के लिए समय उत्तम है।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता के सम्मान में वृद्धि होगी। माता को रिश्तेदारों से सुख-सुविधाएं प्राप्त होंगी, लघु यात्राएं होंगी। भाई-बहनों को जायदाद की खरीद-फ़रोख्त से लाभ होगा, शिक्षा में सफलता मिलेगी, धनी बनेंगे, परिवर्तन हो सकते हैं, अचानक अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपकी संतान धनी बनेगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में सुदृढ़ता आएगी। उच्चाधिकारी प्रशंसा करेंगे। परामर्शदाता धनी बनेंगे। व्यापारी कोई नया कार्य प्रारंभ कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शरीर में छोटी-मोटी बीमारियों से प्रतिरोध की शक्ति रहेगी। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की आराधना भैरवजी के रुप में करें।

अंर्तदशा :- मंगल - बुध
(09/11/2023 - 05/11/2024)

आपके लिए मंगल की महादशा 10/05/2020 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 09/11/2023 को प्रारंभ होकर 05/11/2024 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपको कार्यों में सफलता मिलेगी। मित्र आपकी मदद करेंगे। परिवार में सुख रहेगा। मामापक्ष के लोग धनी बनेंगे। व्यापारिक, प्रशासनिक और संगठनात्मक कार्यों से लाभ होगा। सब सुख-सुविधाएं, उत्तम भोजन और वस्त्र उपलब्ध होंगे। संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। उच्च पद मिल सकता है; कार्यों में सफलता मिलेगी। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को उच्चपद प्राप्त होगा। आपके पिता स्पर्धियों पर विजयी होंगे।

माता को विभिन्न माध्यमों से धन प्राप्त होगा। भाई-बहनों को सफलता में बाधाएं आ सकती हैं मगर स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। उनके बहुत से मित्र होंगे; अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी संतान विज्ञान, वाक्विद्या और व्यापार में प्रवीण होगी। परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारियों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को निवेश से लाभ होगा, जबकि व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

RATNA JYOTI

योग

रुचक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
दीर्घाः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरवलः साहसप्राप्तसिद्धि-
श्चारुभ्रूनीलकेशः समकरचरणो मन्त्रविच्चारुकीर्त्तिः।
रक्तःश्यामोऽतिशूरो रिपुबलमथनः कम्बुकण्ठो महौजाः ।
क्रूरो भक्तो नराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजङ्घः।।
खट्वाङ्गपाशवृषकार्मुकचक्रवाणा-
विज्ञाङ्कहस्तचरणः सरलाङ्गुलिः स्यात्।
मन्त्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रं
मध्यं च तस्य गदितं मुखदैर्ध्यतुल्यम्।।
सह्यस्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्ततिरायुरस्य।
शास्त्राग्निचिह्नोरुचकाभिधाने देवालयान्ते निधनं प्रयाति।।

।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 3-5 ।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर मंगल केन्द्र में हो तो रुचक नामक योग बनता है।

इस योग वाला जातक दीर्घायु होता है। वह सुन्दर कान्ति, शक्तिशाली, साहसी, यश प्राप्त करने वाला, महावीर, मन्त्रवेत्ता, शत्रुओं को भय दिखाने वाला, क्रूरप्रकृति वाला, गुरु वर्गों के समक्ष विनम्र, हाथ पैरों में खट्वाङ्ग (शिव अस्त्र विशेष), पाश, वृष, धनुष, चक्र, वीणा, विद्या आदि रेखा होती है, ये चिह्न भाग्यशाली मनुष्यों के द्योतक हैं। अच्छी सम्मति देने वाला, युद्धादि अथवा मारणादि प्रयोगों में कुशल होता है। शस्त्राग्नि चिह्न से युक्त जातक देवस्थान के समीप मृत्यु प्राप्त करने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल　　योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में रुचक नामक महापुरुष योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। यह योग अत्यंत ही उत्तम माना जाता है। फलस्वरूप आप एक प्रभावशाली, पराक्रमी, विख्यात् एवं धनेश्वर्य से युक्त होंगे, तथा पराक्रम से उच्चराज योग की प्राप्ति करेंगे। आप सेना, इन्जीनियरिंग, मेडिकल, होटल एवं भवन निर्माण सम्बंधी क्षेत्र में उच्चस्तर प्राप्त कर सकते हैं।

हंस योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
रक्तास्योन्नतनासिकासुचरणो हंसप्रसन्नेन्द्रियो
गौरः पीनकपालरक्तकरजो हंसस्वनः श्लैष्मिकः।

शङ्खाब्जाङ्कुशमत्स्यदामयुगकैः खट्वाङ्गमालाघटै-
श्चंचत्पादकरस्थलो मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः।।
जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वानितासुनूनम्।
ओच्चः रसाष्टाङ्गुलसम्मितं तत्तनोस्तथायुरिहास्ति षष्टिः।।
वाह्लीकदेशादरशूरसेनगन्धर्वगङ्गायमुनान्तरालान्।
भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः प्रमाणैः।
।। मानसागरी।। अ. 4/श्लोक 2, 9 1-3।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर गुरु केन्द्र में हो तो हंसयोग बनता है।

इस योग वाला जातक ऊंची नासिका (नाक), सुन्दरचरण (पाँव), हंससदृश प्रसन्न इन्द्रिय वाला (जिसकी अङ्ग प्रत्यङ्ग हंस की तरह सुन्दर हों), गौरवर्ण, मधुरवाणी वाला, कफ प्रकृतिवाला, मछली, कमल, अङ्कुश, शङ्ख, दाम, खट्वाङ्ग, माला, जुआ, घड़ा इन चिह्नों से सुशोभित हाथ पांव वाला, मधु के समान नेत्रवाला और सुन्दर गोलाकार शिर वाला होता है। जलाशय में स्नेह रखने वाला, अत्यन्त कामी, स्त्रियों से तृप्ति न पाने वाला, 86 अङ्गुल ऊँचा शरीर वाला तथा 60 वर्ष तक जीने वाला होता है। वाह्लीक सुरसेन, गन्धर्वादिदेशों में तथा गङ्गा यमुना के मध्य देशों में भोग करके वन में मृत्यु प्राप्त करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु　　　　　　　　　　　　योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप- आप उच्चकोटि के विद्वान, राजनेता, मंत्री, शैक्षणिक क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त, धार्मिक संस्था के अध्यक्ष, ज्योतिष के विद्वान या ज्योतिष विषय से सम्बंध रखने वाला, आध्यात्मिक गुरु, प्रवक्ता, संस्था के संस्थापक, शेयरब्रोकर, राजदूत, वित्तीय संस्था के स्वामी तथा विविध-क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त करेंगे।

सेवा की दृष्टि से आप शैक्षणिक संस्थाओं के प्राचार्य, धर्मगुरु, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, प्रशासनिक सेवा आइ. ए. एस. में विशेष ख्याति एवं सफलता प्राप्त करने में अग्रणी होंगे। आप राज्य में मंत्री, कूटनीतिज्ञ, उच्च शास्त्रकार, तथा विधिविशेषज्ञ के रूप में विश्वविख्यात होंगे।

व्यवसाय के दृष्टिकोण आप शैक्षणिक संस्था संचालक, कम्पनी स्वामी, पीले रंग की वस्तुएं, धातुओं के उच्च व्यवसायी, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट कन्सलटेंसी, वित्तीय संस्था के माध्यम से धन के लेन-देन से बहुत लाभ अर्जित करके धनी, ऐश्वर्यशाली, सम्मानित व्यक्ति के रूप में अपना जीवन व्यतीत करेगें।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है

और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : केतु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

पर्वत योग

लग्नाधिप्राप्तभूपतिस्थितराशिनाथः
स्वोच्चस्वभेषु यदि कोणचतुष्टयस्थः।

योगः स पर्वताख्यः।
स्थिरार्थसौख्यः स्थिरकार्यकर्त्ता क्षितीश्वरः पर्वतयोगजातः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 35, 36।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश जिस राशि में है, उस राशि का स्वामी अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पर्वत योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका सुख और धन दोनों स्थिर रहेगा। आप स्थिर कर्म करेंगे। मकान बनवाना, बाग लगाना, कल-कारखाने की स्थापना आदि आपके स्थिर कार्य होंगी,

छत्रयोग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सुसंसारसौभाग्यसन्तानलक्ष्मी
निवासो यशस्वी सुभाषी मनीषी।
अमात्यो महीशस्य पूज्यो धनाढ्यः
स्फुरत्तीक्ष्णबुद्धिर्भवेच्छत्रयोगे।।
।। फलदीपिका ।। अ. 4/श्लोक 44, 49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव में शुभग्रह हों या शुभ ग्रह से पंचम भाव निरीक्षित हो तथा पंचमेश अस्त न हो और वह स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो छत्रयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,मंगल योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सौभाग्यशाली, पुत्रवान, धनवान, यशस्वी, बुद्धिमान, प्रखर वक्ता, तेज बुद्धिवाले और राजसुख से युक्त राजा के मंत्री होंगे। आप राजसरकार से सम्मानित होंगे। आपको पंचम भाव से संबन्धित सभी सुख प्राप्त होंगे।

ख्याति योग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सत्क्रियां सकललोकसम्मतामाचरन्नवति सज्जनान्नृपः।
पुत्रमित्रधनदारभाग्यवान् ख्यातिजो भवति लोकविश्रुतः।।
।। फलदीपिका।। अ. 6/ श्लोक 44, 54।।

यदि जन्मपत्रिका में दशम भाव में शुभ ग्रह बैठे हों और कर्म भाव को शुभ ग्रह देखते हो तथा दशम का स्वामी अस्तङ्गत न हो एवं स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो ख्याति योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,मंगल योग की संभावना : 96 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप श्रेष्ठ कार्य करेंगे एवं प्रशंसित होंगे, राजा होकर अपनी प्रजा की रक्षा करेंगे और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। आप स्त्री, पुत्र, मित्र एवं धन का सुख प्राप्त करेंगे और बहुत ही भाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

अचल लक्ष्मी योग

चन्द्रेण मङ्गलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत्।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीर्नैव विमुंचति।।
।। मानसागरी।। अ. 4/श्लोक 8।।

यदि जन्मकुंडली में मंगल के साथ चंद्रमा चाहे जिस भाव में हो जातक के पास सदैव लक्ष्मी निवास करती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके पास सदैव धन रहेगा। आपके घर में स्थिर लक्ष्मी निवास करेगी।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

निष्कपट योग

लग्ने गुरौ दानवपूजितेन युक्ते यदा तस्य विशुद्धचित्तम् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-146 ।।

यदि जन्मपत्रिका के लग्न में बृहस्पति शुक्र से युक्त हो तो जातक निष्कपट होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निष्कपट प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,केतु,मंगल,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

कारकस्थितराश्यंशनाथे केन्द्रत्रिकोणगे ।
बुद्धीश्वरेण संदृष्टे तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-36 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव कारक ग्रह जिसकी राशि अंशक में हो वह केंद्र या त्रिकोण में पंचमेश से दृष्ट हो तो तीव्रबुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीक्ष्ण बुद्धि वाले होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-11 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी निज नवांश में हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मात्र एक पुत्र का सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

गुल्म रोग योग

तथाभूते शनौ गुल्मरोगो वात्र विशेषतः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि अ.-5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठस्थान में शनि षष्ठेश पाप युक्त या पाप दृष्ट हो तो जातक को विशेषकर गुल्म रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,गुरु,सूर्य,मंगल,राहु,के योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको गुल्मरोग (त्वचा रोग) होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वात (वायु) रोग योग

षष्ठाष्टमे मन्दे वातामयम्।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि स्थित हो तो वात रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वात रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु,केतु,सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य,मंगल,राहु,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः।
।। जातकपारिजात ।। अ.-14/श्लो.-3।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र,शनि योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु योग

यदि होरागतः शुक्रः केन्द्रेष्वन्यतमे गुरुः।
नैधने न च पापाः स्युः सविंशं जीवते शतम्।।
।। सारावली ।। अ.10/श्लो.-95।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न में शुक्र हो और किसी भी केंद्र स्थान में गुरु हो तथा अष्टम भाव में पापग्रह न हों तो 120 वर्ष जातक जीता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र योग की संभावना : 108 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु होकर 120 वर्ष तक जीवित रहेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु योग

राशौ कर्कटहोरायां गुरुशुक्रौ समन्वितौ।
गुरुश्चन्द्रयुतो वाऽपि निधने न च कश्चन ।।
।। सारावली ।। अ.10/श्लो.-96।।

यदि जन्मपत्रिका में कर्क लग्न में गुरु शुक्र हों या गुरु चन्द्रमा से युक्त कर्क लग्न में हो तथा अष्टम में पापग्रह न हों तो 120 वर्ष तक जातक जीता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु योग की संभावना : 864 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु होकर 120 वर्षों तक इस संसार का सुखभोग प्राप्त करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग शरीर योग

केन्द्रगौ पुष्पवन्तौ विकलाङ्गः।
।। बृहद्योगरत्नाकर पृ. -5.।।

यदि जन्मकुंडली में केंद्र (1-4-7-10) में सूर्य और चंद्रमा दोनों ग्रह स्थित हो तो जातक विकलांग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अंग से हीन होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पाप कर्त्तरी योग

''पापयोगोद्भवः कामी पापकर्मपरार्थयुक्।।
व्ययस्वगैः पापैर्विलग्नात्पापाख्यः।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 5 ।।

यदि लग्न से द्वादश एवं द्वितीय भाव में पापग्रह हों तो पापकर्त्तरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु,चंद्र योग की संभावना : 6 में 1

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।

RATNA JYOTI